।। श्री सद्‌गुरु प्रसन्न ।।

लहरी भजन संग्रह

हिन्दी और मराठी

- लेखक -

श्री संत जयरामदास उर्फ लहरीबाबा, कामठा

-प्रकाशन तिथी-

२२ डिसेंबर १९८०

किंमत १ रुपया ७५ पैसे

।। श्री सत्‌गुरु प्रसन्न ।।

ॐ

लहरी भजन संग्रह

★

हिन्दी और मराठी

लेखक

श्री संत जैरामदास उर्फ लहरीबाबा

किंमत १ रुपया ७५ पैसे

श्री संत जयरामदास उर्फ लहरी बाबा
कामठा

आश्रम : कामठा, त. गोंदिया जि. भंडारा

जन्म तारीख ७-१२-१९२२

* अनुक्रमणिका *

हिंदी विभाग

भजन क्र.		पृष्ठ क्र.
१	करु स्मरण तुम्हे गणराज	१
२	काया तेरी है एक मिट्टीका	२
३	मेरे भारत के इन्सान	२
४	मानव लपझप में	३
५	मन जिसका है जाग गया	४
६	अपनालो मुझे अपनालो	४
७	अब बिगड गया इन्सान	५
८	रामनाम सौदा मिलो बडा	६
९	आजा रे, आजा र	६
१०	विपत काल मे ऽऽऽ	७
११	निंदीया न आये मोहे	८
१२	तुम अगर संत संगत	९
१३	अगर है प्रेम भारतमे	१०
१४	जो किसीसे कुछ मांगता	१०
१५	मेरे ये दिल की बात	११
१६	मेरा श्याम है छबीला	१२
१७	आगे कदम सबको बढाना	१२
१८	जब पीर पराई नहीं	१३
१९	भक्तो के रखवाले	१४
२०	जलनेवाले जलते रहो	१५
२१	मेरे शाम सलोने आजा	१६
२२	करता नही काम चाहता	१६
२३	जाग जावो सोनेवाले	१७
२४	कसौटी बहुत हुई	१८
२५	भाव प्रभूसे तू नही	१८
२६	प्रभु सभी के पालन हारे	१९
२७	रामकृष्ण गोविंद मुरारी	२०
२८	संतो की राह चलें	२०
२९	काम करो और मिलके	२१
३०	देश पियारे थे रखवारे	२१
३१	किसान भाई जाग जानारे	२२
३२	भाव भक्ति दृढ मन	२३
३३	जग के इन्सान है	२४
३४	संस्कार सबके एकसे	२४
३५	खेती को जोतेगा कोई	२५
३६	खोते जाते हैं प्रेमभाव	२६
३७	राही मनवा धर्म की	२७
३८	जिन लोचन नेरामको	२७
३९	नहिं पिर भरी जिनके	२८
४०	गरीबो के दुखी दिलकी	२८
४१	तुम दुखियो की सुनो	२९
४२	अगर है शौक मिलने का	३०
४३	नाम तेरा राधा रमैया	३०
४४	श्रीराम जैराम गाते चलो	३१
४५	ये मेरा, मेरा कहके	३१
४६	काहे भुले रे नादान	३२
४७	पाये है भगवान भजते	३३
४८	पति की सेवा करने आज	३४
४९	जग डूब रहा है सारा	३४
५०	समय यह बदल गया	३५
५१	पीता शराब का प्याला	३६
५२	मेरा मेरा कह कर प्यारे	३६
५३	मैं दास हूँ तुम्हारा	३७
५४	सच्चे दिलकी पुकार	३८
५५	देखते बदला है रंग	३८
५६	जब भूखी पडी रे जनता	३९
५७	मानव धर्म सिखाने को	४०
५८	तेरे दर की राहों पर	४१

भजन क्र.	पृष्ठ क्र.
५९ हरी तेरी मुरलीने	४१
६० प्यारे इस सुंदर जीवन	४२
६१ यह तन छोडकर प्यारा	४३
६२ हो जा काम मे तैयार	४४
६३ कबहू सुधरेगी समाजबा	४४
६४ नाम सुमर तेरी बिती	४५
६५ मन हरी दर्शन को अधीर	४६
६६ तुम तो घुमते हो निठल्ले	४७
६७ दिल मेरा है दिलदार	४७
६८ जरा सुनले ये इन्सान	४८
६९ प्रभू तेरो खेल है	४८
७० कलयुग में तु करता	४९
७१ ये दुनिया है रे मतलब की	५०
७२ उपरी आदमी की है	५०
७३ अगर भलाई चाहता है	५१
७४ मिटे न मन की प्यास	५१
७५ जिस आदमी का विश्वास	५२
७६ हसोना SSS सिखो २	५३
७७ कमाले राम रतन	५३
७८ राम का नाम लेकर प्यारे	५४
७९ तुम्हारे श्रद्धा भाव बुरी	५५
८० दुश्मन न सज्जन कोई	५५
८१ भलाल गुंडे मालोमाल	५६

मराठी विभाग

भजन क्र.	पृष्ठ क्र.
१ मोकळ्या मनाचा	५७
२ मज लागली आहे चिंता	५८
३ मानवा कैसी तुमची रीत	५९
४ साधुसंताचा भेष घेऊनी	५९
५ किती दुर तुम्हे ते गांव	६०
६ कंठ भरुनीया येती	६१
७ जने तरण्यासी होत असे	६२
८ गड्या मागे पुढे पाहुन	६३
९ मानवा इतके दिवस कां	६४
१० माझे अवगुण ने मला	६५
११ प्रभु माझ्या या नावेला	६५
१२ किती गोड तुझे हे शब्द	६६
१३ कोण तोडील भवपाश	६६
१४ मानवा कोकाशी भुलला	६७
१५ माणसा सोड हिंसेला	६७
१६ केव्हा भेट देशी तू	६८
१७ वाढो सर्व जीवा प्रति	६९
१८ जीवन हा पलघटकेचा	७०
१९ सत्य मार्ग आपुना सोडू	७०
२० कठीन वेळी साहाय्यक ना	७१
२१ दुष्ट जना करी जरी	७२
२२ गड्या मी झालो, हरी	७३
२३ अन्याय अत्याचार बघवेना	७३
२४ अस्सल कोण आणि नक्कल	७४
२५ गांधी युगाचे राष्ट्रीय संत	७५
२६ दुःख कळे ज्याचे हो त्याला	७५
२७ तुम्ही सत्य मार्गाने चला	७६
२८ सुखाचा मार्ग बघण्यासी	७७
२९ अज्ञानी जीव निती	७८
अभंग	७८
३० झिजावे देह पर उपकारी	७९
३१ किती मधुर तुझी मुरली	७९
३२ किती सांगु नवल विठ्ठल	८०
३३ विचाराचे दर्शन घ्यावे	८१
३४ मरुन गोड अंतरी जोड	८१
३५ राम नाम, राम नाम	८२
३६ हांव हांव, कांव कांव	८३
३७ मी रामाचा अहो मी	८३
३८ नाव असे या देहाचे	८४
३९ जन्म जात स्वभाव	८५
४० ज्याचा अनुभव त्याला	८६

❏ संदेश ❏

आज के इस युग मे मनुष्य ने भौतिक जीवन को ही सब कुछ मानकर मात्र भौतिक पुत्रों की प्राप्ति में ही अपना संपूर्ण जीवन लगा दिया है। भौतिक सुखों की अधिक से अधिक प्राप्ति और उनके सग्रह की लालसा ने उसे अंधा बना दिया है जिसके फल स्वरुप वह अच्छे और बुरे कर्मो का अंतर भुलता जा रहा है स्वार्थ सिद्धी ही उसके जीवन का उद्देश्य बन रही है जिसके कारण समाज में परस्पर ईर्ष्या, द्वष और अशांति का निर्माण हो रहा है।

इसका एक कारण यह है कि मनुष्य ने मानव जीवन के लिये सबसे अधिक आवश्यक विज्ञान "अध्यात्म" को भुला दिया है। भौतिक उन्नति को ही सबकुछ मानने के कारण वह इतना अधिक अहंकारी छली, कपटी और दंभी हो गया है कि स्वयं को ही वह इस विश्व का कर्ता धर्ता मान बैठा हैं; यहाँ तक कि इस ब्रम्हांण्ड के रचयिता और पालन कर्ता ईश्वर को भी वह भुला बैठा है "ईश्वर कहाँ है, यदि हैं तो हमे दिखाओ" वह कहने लगा है। किन्तु वह भूल जाता है कि जिस प्रकार बिजली को देखा नही जा सकता किन्तु उसको शक्ति का अनुभव, प्रकाश, उष्णता या यंत्रो आदि के द्वारा किया जा सकता है उसी प्रकार ईश्वर भी शक्ति रुप है एसी शक्ती जो स्वयंम् चलीत है और जो संम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड मे व्याप्त हैं; अनुभव लेन वाले को सदैव ही उस शक्ति का आभास होते रहता है।

भाईयों सोच कर देखिए, अपने घर में लगे हुए चार पौधों को जीवित रखने के लिए हमें कितना श्रम करना पडता है; तब जिसनें इस पृथ्वी पर हजारों प्रकार के वृक्ष, फल, फूल पैदा किए हैं वह कौन होगा? मनुष्य ने बड़े बडे यंत्र बनाए, बांध बनाए, बिजली घर बनाए किन्तु वर्षा की कमी के कारण सब धरे के धरे रह गए, सारे संसार पर अकाल की नौबत आ गई तो जिस शक्ति के कारण हजारों लाखों वर्षो से ऋतुएँ अपने अपने समय पर आ-जा रही हैं वह शक्ति कौनसी और कैसी होगी?

शरीर के रोग को दूर करने के लिए बड़े बड़े विद्वान डॉक्टरों की ऐंडी चोटी का पसीना एक कर देना पडता हैं तो जिसने इस मानव शरीर का ही नहीं तो भिन्न भिन्न प्रकार के पशु पक्षी जीव जन्तु कीड़े मकोडों का निर्माण किया है, छोटे से छोटे और बडे से बडे प्राणी के जन्म की व्यवस्था की है वह कौन होगा ? उसकी शक्ति कैसी होगी ?

मेरे भाईयों, वही ईश्वर है; उसीने इस सृष्टी का निर्माण किया है और वही इसका संहार भी करता है। उसीने हमे मानव जन्म दिया है, केवल इसलिये कि हम शारिरीक सुख की प्राप्ति के लिए भटकते रहे, बल्कि इसलिए की हम अपने विवेक को निरंतर प्रज्वलित रखकर, उसके प्रकाश में सच्चे अर्थो में मनुष्य का जीवन जी सके। अपने में निहित मानवीय गुणों दया, क्षमा, शांति, त्याग आदि का विकास करते हुए स्वार्थ लोभ, छल, कपट, वासना आदि दुर्गुणों दूर रख सकें। जो मनुष्य नीति नियमों से चलकर इन गुणों का विकास करता है वह अपने आप ही ईश्वर से नाता जोड लेता है। केवल मंदिरों मे जाने से या पोथी पढने से ईश्वर की प्राप्ति नही हो सकती उसके लिये सबसे पहले हमे अपने आप को निर्मल बनाना होगा।

भाईयों याद रहे कि हम नाशवान शरीर लेकर इस पृथ्वी पर आएं है और हमारा समय समाप्त होने पर हमे अपना धन ऐश्वर्य सब कुछ यही छोड़कर जाना होगा। उस समय बडासे बडा धन या ऐश्वर्य हमारी मदद नहीं कर सकेगा। हमारे अच्छे कर्म ही हमारा साथ दे सकेंगे, इसलिये अब जाग जाओ और शेष जीवन सच्चे कामों में लगा दो, इसी में हमारी, हमारे समाजकी भलाई है।

जैरामदास

ॐ

हिन्दी–विभाग

भजन १ (तर्ज– ओ नाग कही जा बसीयों)

करु स्मरण तुम्हे गणराज काज, मेरा सिद्ध कर देना ।। टेक ।।
ऋषी मुनी निसिदिन, तुमको ध्यावत, वेद भी चारो बखानी ।
प्रथम करत है पुजा तुम्हारी, देव संत और ग्यानी ।।
श्री बुद्धीदायक आज, काज मेरा सिद्ध कर देना ।।१।।

गिरजा शंकर के तुम बालक, सकल सिद्धी के दाता ।
विघ्न विनाशक नाम तुम्हारा, तीनो लोक गुण गाता ।।
मेरी रख लेना अब लाज, काज मेरा सिद्ध कर देना ।।२।।

कानन कुण्डल रुप मनोहर, सिर पर मुकुट बिराजे ।
करमे त्रिशुल और मुषक वाहन, पांव में घुंगरु बाजे ।
मोदक अति प्रिय महाराज, काज मेरा सिद्ध कर देना ।।३ ।

है जैंराम दर्शन का प्यासा, खड़ा तुम्हारे द्वारे ।
भवसागर के कठीण भंवरसे, नाव लगादो किनारे ।
मेरे मन मंदीर मे बिराज, काज मेरा सिद्ध कर देना ।।४।।

भजन २ (तर्ज– एक परदेसी मेरा)

काया तेरी है एक मिट्टीका ढेला, पानि लगते हि यह घुलनेवाला
पांच तत्व तीन गुण से बना पुतला,
इसके अंदर रमता है पंछी निराला ।। टेक ।।
ओहम सोहम का जप चलता है, घटमें माला नित्य फिरता है।
श्वासोश्वास में पंछी झुलता झुला ।।१।।
ईडा-पिंगडा ये दो दरवाजे, सुसूम्ना रानी बिच मे बिराजे ।
त्रिकुट शिखर मे होवे मेला ।।२।।
हंसा परमपदको पहोचते हों, वहां सुखका कोई पारावार नहीं।
जैराम कहे गुरुबिन ये भेद ना मिला ।।३।।

भजन ३ (तर्ज– भमत भर दे रे झोली।

मेरे भारत के इन्सान, अब हुशियार हो जाना ।
तेरी जग में रहेंगी शान, सभी को अपने जैसा जान ।। टेक ।।
ना कर किसीसे दुष्मनी प्यारे, प्रेम मार्ग से चलना ।
धन माया के वंश मे होकर, राह न अपनी बदलाना ।।
अब छोड़ दे धन अभिमान, मानवताको तु पहिचान ।।१।।
एक दिन है यहां सबको मरना, नहि सताना किसीको ।
धन दौलतके जाल बिछाकर, नही फंसना किसीको ।।
यदि है सच्चा धनवान, जगतमे पीर पराई जान ।।२।।
भव सागर है तरना प्यारे, प्रभुसे स्नेह लगाना ।
आगे पिछे तिनों लोगमें, नही लगेगा ठिकाना ।।
तुझे दु:ख देंगे यमराज, कहना संतो का तु मान ।।३।।

मानव बनकर आया जगमे, नेक काम तु करले ।
दया धर्म के दुर्लभ धन से, अपनी तिजोरी भरले ॥
कहता है दास जैराम, रहेगा जगमे तेरा निशान ॥४॥

३५५२१ भजन ४ (तर्ज– सौ साल पहले)

मानव लपझप में, तु उमर गमाया ।
एक दिन प्रभुका नाम नहि लिया ॥टेक॥
तुझको किसीने यदि बुलाया भजन में ।
बहाना बताया कोई नहि मेरे घरमें ।
कहाँ सिखा तुने ये ऐसा रवैया ॥१॥
खुशी से जाता तु नाच तमाशों मे ।
आने शरमता तु प्रभुके भजनमे
गर्भ मे करार करके, भुल गया भैय्या ॥२॥
लोंगोंको फसाया लपझप बताके ।
तु धन कमाया, भोले गरिबोंसे ।
दिन दुःखियों को तुने तरसाया ॥३॥
जीन गरिबोंसे हुवा तु धनवान
बिपत पड़ी गरिबोपर करता बहाना ।
दिलमे पाप पुण्यका बिचार न किया ॥४॥
लपझप में किसके लिये धनको कमाता ।
अन्त समय तुझको ये देंगे क्या सहायता ।
अपने कर्तव्यको भुल गया भैय्या ॥५॥
बुरे कर्म किया है, उसको तु भुल जा ।
दास जैराम कहे संत संगतमें सुधर जा ।
तब जिवन तेरा सफल होगा भैया ॥ ६ ॥

भजन ५ (तर्ज– घर आया मेरा परदेशी)

मन जिसका है जाग गया, हरि गुणमे तन सफल किया ।।टेक।।
उसको झुठा जग सारा, लगता हैं हरिगुण प्यारा ।
माया से वह मुक्त हुवा ।।१।।
त्याग बिना बैराग्य नही, वैराग्य बिना ये भक्ती नही ।
प्याला ब्रम्ह रस का पिया ।।२।।
निसदिन संतसंग मे रमता, एक पल भी न समय खोता
देहकी सुधबुध भुल गया ।।३।।
हो गया जो कोई मतवाला, सबमे देखे मुरलीवाला ।
किससे प्रेम न बैर किया ।।४।।
जैराम कहे गुरुबिन भाई, इस पदको समझे नाही ।
बिरलाई कोई रंग गया ।।५।।

भजन ६ (तर्ज– मन डोले, तेरा तन डोले)

अपनालो, मुझे अपनालो, मुझे अपनालो भगवान ।
अब मै शरण तुम्हारि आया हुँ ।। टेक ।।
बालक पनमे, खेल खेल में, योंही समय गमाया ।
सत्य असत्य का ज्ञान नहि था, क्या खोया क्या पाया ।
नही ध्यान रहा, नहि ज्ञान रहा, मै रहा निपट नादान ।।१।।
आई जवानी, ओ दिवानी, नये नये रंग लाये,
धन संतान स्त्रिया सुख पाये, जी भर मौज उठायें ।
है चैन कहाँ फीर समय कहाँ, जो लेता तुम्हारा नाम ।।२।।

आया बुढ़ापा गई जवानी, हो गई कमर कमान ।
अंग अंग सब कांपन लागे, बेबस हो गई जान ।।
पूछे नही कोई बात मेरी, मैं खुदहि हुँ हैरान ।।३।।
मन मैला विषयों में फिरता भक्ती मार्ग नही लगता ।
भुले को अब मार्ग दिखादो, तुम हो जगके कर्ता ।
जैराम कहे अब समय रहे, दो मुझको सतका ज्ञान ।।४।।

भजन ७ (तर्ज–बापू का पुष्प विमान)

अब बिगड गया इन्सान, बना सैतान हुवा आवारा
घुमता है मारा-मारा ।। टेक ।।

निसदिन करे लपझप धंदा, जालशाहि का डाले फंदा ।
छोड़ मानवता की चाल, हुवा क्रंगाल ।।
झूठे व्यवहारा ।।१।।

दुसरों के बहु बेटीपर, सदा हो रखता बुरी नजर ।
करता है झगड़े तुफान, बना हैवान
लुट बाजारा ।।२।।

ये घमंड गुमान मे मस्त रहे, लोगोंको शान से बतलायें
खुदको हि समझे गुणवान, कौडीका न ग्यान
खोता जीवन सारा ।।३।।

जो अपना प्रपंच सघाकर, दुसरों पर उपकार करे ।
जगत में उसका मान, वहीं इन्सान,
पूण्य करतारा ।।४।।

जो खुदको आपही जाने दुसरों को भी वैसाही माने ।
कहता हैं जैरामदास वही पूण्यवान
हुवा भवपार ।।५।।

भजन ८ (मेरा छोटासा देखो ये)

रामनाम सौदा, मित्रों बडा अनमोल है ।
उसे लेनेवाला बिरला कोई नर है ॥ टेक ॥

खरिदमे लगता नही माल खजाना इसे ।
उसके महिमा का अन्त न लगता किसे ।
जितना वर्णन करों, उतना कमहीं तो है ॥१॥

षड्‌विकारोंसे मित्रों, तुम्ही दुर हो ।
इसे पानेके लिये, मनमे दृढभाव हो ।
दिखनें दिखता फूकट, पर लेना बिकट है ॥२॥

इसे लिया था, मिरा सकुबाईने ।
ध्रूव प्रल्हादने और बहुत संतोने ।
तन–धन–मन अर्पण कर, मोक्षपद पाये हैं ॥३॥

जिसको लेना है, तो पहले मनको साधो ।
दया क्षमा शांतीका मार्ग प्यारे खोजो ।
जैराम कहे वेद शास्त्रोमें यहि लिखा है ॥५।

भजन ९ (तर्ज– (आजा रे ओ मेरे दिलबर आजा)

आजा रे, आजा रे, ओ मेरे भारत आ जा
आके आस बंधा जा रे,...
ओ ऽऽऽऽ मोरी ... मोरी ॥ टेक ॥

गईयाँ मैंया तड़प रही है, कहाँ गये रखवाले ऽऽऽ २
चारो ओर ये, नजर डाले, किसको दुःख सुनाये,
आजा रे २ ओ मेरे भारत आजा ... ॥१॥

मथुरा, गोकूल सुना पड़ा है, तरसे भक्त ये भोले ऽऽऽ २
तुम बिन शांती, कहि ना मिले, दर दर ठोकर खायें ऽऽऽ
आजा रे, ओ मेरे भारत आजा ॥२॥
वृन्दावन के कुंज गलीमे, आके रास रचाये ऽऽऽ २ ।
नित नुतन ये खेल रचाके, गोपी मन बहलाये ।
आजा रे ओ मेरे भारत आजा ॥३॥
कहे जैराम दौड़के आवो, बिगड़ी सबकी बनावो ऽऽऽ २
तड़प रही है जनता सारी कौन यहाँ कैवारी ऽऽऽऽ
आजा रे ओ मेरे भारत आजा ।

भजन १० (तर्ज– डपलीवाले ऽऽऽ डपली बजा)

विपत काल मे ऽऽऽ नामहि सबर
लेता सबकी खबर वो हि राम ऽऽऽ
अरे हरिनाम रटते जा ऽऽऽ ॥ टेक ॥
नामकी महिमा अमीट है भाई,
पापी को भी वो तराये,
श्रद्धा भाव ये, दिलमे बिनये, पलमे दुःख मिट जाये (राम२)
ये संतसंग भली २ ऽऽऽ ये मुक्ती की बेली,
तु स्वरुप नगीना पाजा ॥१॥ विपत काल मे
पूर्व जन्म के पूण्य है तेरे, मानव जन्म को तु पाया,
आगे की सुध लेलो भैय्या, किस कारण तु यहा आया (राम २)
ये मझधार नैया २ ऽऽऽऽ रे कौन है तरैया ।
तु हीत अनहीत परख जा ॥२॥ विपत कालमे...
स्वर्ग नरक ये यहा बसे है, जैसे जो कर्म है करता ।
वैसे हि वो फल को पाता है, वैसा ही उसका विधाता (राम)

कर्म संचित जोड़ी २ SSS खडा है वनमाली
सुविचारों से तु चलते जा ॥३॥ विपत काल में
जैरामदास कहता, हाथ मे तेरे, भाग्य की है यह डोरी ।
जैसी करणी वैसी भरनी, बनाये धनी न भिकारी (राम २)
ना दुश्मन ना सज्जन २ SSS . . . मन तेरा हैं दर्पन,
मानवता का नाता निभाजा ॥४॥ विपत कालमे ऽ

भजन ११ तर्ज– (हरिद्वार पालो)

gmoll

निंदिया न आये मोहे जागे ये नैना ।
तेरे बिन पाऊ न चैना ये मोहना ॥टेक॥
भटकता रहा है ये मन मेरा
देखने प्रभु तेरी सावली सुरतीयाँ ।
कभी तो दिखा दे दरस प्राण प्यारे, तभी तो मिटेगा ।
वे अरमा हमारा ॥१॥
कोई कहे तुझको बसा है तु कासी ।
कोई कहता है घट-घट वासी ।
कहे साधु तु अन्तर ज्योती, छुपावो ना भेद
ये हमसे भी कहना ॥२॥
भटकता हुआ हुँ मैं जनम–जनम का
कोई ना प्रभु तेरे बिन साथ देता ।
कहा ढुंडु तुझको जगतके स्वामी, आकर के मेरी ये
बिगड़ी बनाना ॥३॥
न मागु तुझसे मै धन और दौलत ।
कृपा दृष्टी रखना यही मेरी हसरत ।
जैरामदास देना चरणोंका ठिकाना ॥४॥

भजन १२ (तर्ज– अगर साथ देना का वादा करो)

तुम अगर संत संगत में आते रहो ।
जन्म ~~जरा~~ मृत्युके फेरे से छुट जायेंगे ॥टेक॥

कितनी विपत्ती आये तुम्हारे उपर
लेते नाम हरिका ये टल जायेंगी ।
तुमने दृठ से हरि को पुकारा कभी
प्रभु करुणा को सुनते चले आयेंगे ।
तुम अगर सतकर्म को करते रहो
हर समय प्रभु तुझको ये मिलते रहेंगे ॥१॥

तुमने जब किसी जिव को दुःख है दिया
तो जर्जर हो जीवन बिगड़ जायगा ।
तुम न समजो मैं धनवान गुणवान हूँ ।
ये अभिमान पलभर मे मिट जायगा ॥
तुम अगर दुःखी जिवोंसे समझने लगे ।
पल-पल में प्रभुजी चले आयेंगे ॥२॥

द्वेष भाव भरा है तुम्हारे अंदर ।
कैसे पावोंगे जगमें तुम भगवान को ।
बुरे कर्म को करना तुम छोड़ो भाई,
जगमे किर्ती तुम्हारी रह जायेगी ।
तुम अगर सत पथ पर चलते रहो ।
जैराम जीवन सफल जगमे हो जायेगा ॥३॥

भजन १३ (तर्ज– अगर है ज्ञान को पाना)

अगर है प्रेम भारतसे, तो तन-मन-धन को दे डालो ।
वतन के बनकर शिपाई, रहा बाकी बचा भी दे डालो ।। टेक।।
करो उन्नती सब मिलकरके, एकता भावसे चलना
द्वेष ना हो किसी जिवका, बंधुत्व भाव को धरलो ।। १ ।।
पड़े आफत किसी पर जब, मदत करना सिखो सबही ।
दु:खमे साथ देकर के, काम उनका सफल करलो ।। २ ।।
रखो व्यवहार तुम अपना, भाई जरा निभाने का ।
रहेगी कीर्ती दुनियाँ मे, इसि नीति को अपनालो ।। ३ ।।
करो प्रार्थना सब मिलकर, अपने को आप पहिचानो ।
तभी जीवन सुखी होगा, नाम प्रभुका सभी बोलो ।। ४ ।।
कहे जैराम जो वाणी वेद का सार है भाई ।
भुलो मत नीति-नियम को ध्यान मे बात यह रखलो ।। ५ ।।

भजन १४ (तर्ज– स्कूल मे क्या पढ़ोगे हो राम)

जो किसीसे कूछ मांगता हो रामा, वही हमारा देवता[२] ।
उसके चरणोमे है माथा, हो रामा, हमको वही भाता[२] ।
भाता, हमको वही भाता ।। टेक ।।
जीवन नैया, का सहारा, उसे हि तनमन सारा दे दिया है ।
सुख शांती का किनारा पाया है ।
युग-युग का जोड़ा नाता हो रामा, वही हमारा विधाता[२] ।। १ ।।
कोई जाये तिरथ मंदिर, बसायी है एक तस्वीर इन नयनोमें
तकदीर अजमाई इन चरणो में ।
ज्ञान गंगामें, गोते लगाता हो रामा, संतसंगत प्यास बुझाता ।।२।।

ब्रह्मरसकी भरी वाणी, सुन करके बोल, अज्ञानी भी बन जाये ज्ञानी।
अमर रहे उसकी कहानी ।
जैराम गुरुपे भरोसा रखता हो रामा
वाल्या का वाल्मीक कहलाता ।। ३ ।।

भजन १५ (तर्ज– दिलमे तुझे बिठाके)

मेरे ये दिल की बात, सुनते है मेरे गुरुनाथ ।
छोड़ो ये पक्षपात, दिलदार का पकड़ो साथ ।। टेक ।।

आत्मा रंग का है रंगीला, भक्तीभावमे मतवाला ।
ब्रह्मरसका पिवे प्याला, शिस्त का है रंगीला ।।
पिकर प्याला, बाबा, मतवाला तन की सुध बुध भुला,SSS
संसार में वो अकेला, चहूँ ओर नजर वो डाला ।।
दुजा न कोई मिला[2] ।। १ ।।

आपहि बोले, आपही डोंले, आपहि विश्व संभाले ।
उसकी आज्ञा बिन, कहि भी पत्ता ना हिलपायेSSS
आपहि कर्ता, आप अकर्ता, आपमे आप समाया ।
कोई न समजे वो लिला, भेद को पाया है बिरला
समझे वो गुरुपूत[2] ।। २ ।।

जैराम कहे संत शब्द, बिचार उसमे अनंत ।
थक गयें सभी ग्रंथ, पाया न कोहि अंतSSS ।
लक्ष, अलक्ष, अगोचर दृष्टी, निराक्षर उनकी सृष्टी ।
अगम निगम का खेल, सोहंम है उनके बोल ।
देखे नित्यानंद जोत[2] ।। ३ ।।

भजन १६ (तर्ज– मेरा नाम है चमेली)

मेरा श्याम है छबिला, है भक्तों का रखवाला।
चला आता है भक्तों की पुकार सुनके।
तुम मन के मैल को धोलो, दया भाव हृदय मे रखलो।
खड़ा है प्रभु निरखलो, अपने नैन से ॥ टेक ॥
जो भी प्राणि नाम प्रभुका पलपल मे सुमरता है।
अमर नियम है प्रभुके घरका, भव सागर तर जाता है।
अरे स्मरण करले तनमन से।
ये दो दिनकी जिंदगानी, दुनिया दो दिन का है मेला ॥ १ ॥
तेरा-मेरा भेद हटाले, स्वास स्वास में राम रमैया।
प्रभुको पाने लगेगा जगमे, धन दौलत और रुपैया।
अरे मायामे क्युं तु भुला।
मनकी आंखे खोलरे प्राणी, सामने मुरलीवाला ॥ २ ॥
दुर्योधन का मेवा त्यागकर, साग विदुर हार खाये।
द्रोपदी की फूकार सुनकर, शाम दौड़कर आये।
अरे भावके भुखे है भगवान।
चीर पुराकर लाज बचाई, संकट उसने टाला ॥ ३ ॥
जो भी कोई द्वेष छोड़कर, हरिका चिंतन करता है।
उसके बसमे प्रभुजी रहकर, कामना पूरी करता है
अरे भुले मत तु गर्व में।
वो हि सबका दाता, जयराम शांती दिलानेवाला ॥ ४ ॥

भजज १७ (तर्ज– जो वादा किया वो)
आगे कदम सबको बढ़ाना पड़ेगा।
जयहिन्द का नारा लगाना पड़ेगा।
छोड़ दो संदेशा सारा, लेके तिरंगा प्यारा, लहराना पड़ेगा ॥टेक॥

वतनपर हमारे, अगर आये दुष्मन,
एकता से हम शुद्ध करे तन और मन।
भेदभाव हटाके, कुर्बान होना पड़ेगा ॥ १ ॥

कोई तेली कुनबी हो धोबी का बेटा।
निच उच नही कोई, और बडा छोटा।
बहादुरी अपनी बताने, मातृभुमीकी रक्षा करने,
दुष्मनसे टकराना पड़ेगा ॥ २ ॥

भेदभाव सब दुर करेंगे। ये है सब बरबादी।
सब मिलकर हात बढ़ाये, छोड़ेंगे नही आजादी।
लाल जवाहर के बचनों को,आजादी के सुख सपने को,
जगमे सजाना पडेगा ॥ ३ ॥

प्यारे किसान भाई, कामगार और शिपाई।
ब्रह्मा विष्णु महेश, योगी भारत के रक्षक है येही।
जैरामदास करते कन्हैया, डुबी मझदार नैय्या।
आकर तराना पड़ेगा ॥ ४ ॥

३५५२१

भजन १८ (तर्ज–तेरे दया धरम नहीं मनमें)

जब पीर पराई नहीं जाने रे बाबा,
काहे को साधु कहलाता ॥ टेक ॥

ब्रह्मज्ञान की बात बतावे, दया धरम नही मनमे।
काम क्रोध मे फसा हमेशा, मन विषयों मे जाता ॥१॥

दिन भर तु ये भेष बनाये, मनमे नही थोडी चैना।
पेट के खातीर झुठ कपट सब,भ्रम नहीं तेरा मिटता ॥२॥

लंबी चौड़ी बाते बताकर, भोले जनोंको फंसाता ।
धन के खातीर झुठ कपट कर, उम्र व्यर्थ हि खोता ।।३।।

कर्म धर्म तु मुखसे गाता, करता कोई न काम ।
धर्म का तु मर्म न जाने, व्यर्थ हि गप्पे लगाता ।।४।।

पूजा आरती करे रात-दिन, दिन भर माला घुमाता ।
अन्तकरण भी शुद्ध नही है, जग को छलता जाता ।।५।।

जैराम कहे ऐंसोका जीवन, सफल न जगमे होता ।
कर्म हि उच्चा भाग बनावे, गुरुबिन मोक्ष न पाता ।।६।।

भजन १९ (तर्ज—छुपे हूये ओ चंचल पंछी)

भक्तों के रखवाले प्रभु आ— आ— आ—
भक्त खडे है द्वार तुम्हारे दर्शन तो दिखला ।।टेक।।

दुःख भरी सारी दुनियांमे, तेरा ही है सहारा ।
तु चाहे तो दुःख मिटा दे, तु हि स्वामी हमारा ।
तेंरे सहारे जिती दुनिया, तु पालन वाला ।
हम हैं तेरे बच्चे अज्ञानी, हमको कूछ सिखला ।।१।।

गुंडागिरी आगे बढ गई, चोरी से ना डरते ।
घुसखोरी भी फैल रही है, उसको अच्छा कहते ।
धर्म नीति को खो डाले है, भ्रष्टाचार फैला ।।२।।

झुठ कपट के जाल बिछाकर, भोले जगको फसाते।
अपनी हि सेखी बतलाकर, अपने हि गाल बजाते।
आपस मे ये फूट डालकर करते हैं मुंह काला ॥३॥

बुरे कर्मोसे हमको बचावो, ओ आसमान वाले।
आये है हम शरण तुम्हारे हमको तु अपनाले॥
जैराम दास की बिनती तुम्हसे, आवो नंन्दलाला ॥४॥

भजन २० (तर्ज–आज पुरानी राहोंसे) ३५६ २५

जलनेवाले जलते रहो, रक्षक प्रभूजी हमारे है।
छलनेसे कूछ होगा नही, रक्षक प्रभूजी हमारे है ॥टेक॥

बुराई करो, बदनाम करो, मेरे कर्म जो है उसे भुलु नही।
सत मार्ग हि जब अपनाया है, छलीयोंके छलसे टलु नही।
मन चाहे कहो, पापो मे रहो, छलिया हि धोका खाता है ॥१॥

जब कंटक वृक्ष लगाया है, मिठे फल कैसे खायेगा।
सज्जन को सदा सताते रहा, फिर चैन कहाँसे पायेगा।
तेरा मेरा कहे, दुर्गन मे रहे, इसमे ही जीवन खोता है ॥२॥

दुर्योधनकी नजरोंमे सब जगही, बुरा दिखता था।
कैसा चिन्हे वह सज्जनको, जब खुद ही बुरे मनका था।
बुरे कर्म करे, कैसे सुख मिले, बुराईका बदला पाता है ॥३॥

देखे नही जो अपने अवगुण, जिवन उद्धार करे कैसे।
खुद आप फसे है, मायामे, औरोंको उद्धारे कैसे।
जयराम कहे, सतकर्म करे, उसकोहि भगवंत मिलता है। ४॥

भजन २१ (तर्ज–मेरा दिल ये पुकारे आजा)

मेरे शाम सलोने आजा, बिगड़ी को बनाने आजा।
रोम, रोम, मे रमा, हैं सबसे समा, तेरे दास फुकारे आजा ॥टेक॥
अँखिया है भुली प्रभु हो अब कहाँ।
तेरे बिना सुना सारा है जहाँ।
प्यारि बंसी की आवाज, गिरीधर राखो मेरी लाज
अपना रुप हमें दिखला जा ॥१॥
तन-मन मे मै ढुंढ़ता हुँ तुझे।
दर्शन के बिना मुझे कूछ भी ना सुझे।
क्यों ऐसी सजा, नही कूछ भी मजा
अब आकर दर्शन दिखाजा ॥२॥
कहते मंदीर तिरथमें है रमता तुही।
कोई घर-घर और चराचरा की देता गवाही।
अर्जी को सुन तेरी जिसमे रजा।
अपने चरणोमे मन को लगाजा ॥३॥
कोई कहते सेवा ध्यानने है भाई।
सच झुट क्या है बतादे सही।
कहता हैं जैरामदास, जब पाउँगा आराम
आके भ्रम को मेरे तु मिटाजा ॥४॥

भजन २२ (तर्ज– छलीया मेरा नाम)

करता नही काम, चाहता है आराम
व्यवहार तेरा हरदम झुठा होता है बदनाम ॥ टेक ॥
जुवा सट्टा गांजा दारू इसमे मग्न रहता।
गर्व गुमान की बात बताकर, जिवन अपना खोता ॥
पैसा नही छदाम, करनी तेरी हराम ॥ १ ॥

वैरभाव समता के झगड़े तु फैलाता ।
बिचमे रहती है तेरी दलाली, धोका जगको देता ॥
जिवन खोता तमाम, करके बुरे काम ॥२॥
दया भावना जरा न मनमे, देता सबको धोका ।
दिन गरिबोंकों फसाने, कैसा देखे मौका ॥
करता झुठे काम, भुला है हरिनाम ॥३॥
जैराम तुझे समजाता, छोड़ दे ऐसे काम ।
सत्य राहो को अपनाले, तो होगा तेरा नाम,
करले सेवा काम, भजले सिताराम ॥४॥

भजन २३ (तर्ज– रुख जा ओ जानेवाली रुखजा) ३५६।२१

जाग जावो सोनेवाले जाग जा, चोर खडे है सामने ।
क्यों सोता है गफलत में, समय है प्रभुसे मिल ले ॥टेक॥
बड़े भाग्य से जन्म मिला, माया मे तु है भुला ।
ये समय बडा अनमोल चला, जग दो दिनका मेला ।
जिव खेल रहा है खेला, सब श्वास गमा डाला ॥
सत मार्ग चलते ॥१॥
षड् विकारोंसे बचना, सत संगत को पाना ।
यही तो होगा रोना, फिर मुश्किल है आना ॥
सतगुरु बिना ना रहना, उसीका सहारा लेना ।
उमर जाये तेरी ढलने ॥२॥
यह आखीर सतजना, मान संतो का कहना ।
बंधन से मुक्त होना, सत्यमार्ग को धर लेना ॥
सत्य धर्म की नांव बनाकर, भवसागर तर जाना ॥
जैरामदास ज्ञानको धरणे ॥३॥

भजन २४ (तर्ज- देख तेरे संसार की हालत)

कसौटी मेरी बहुत हुई है, अब न सताओ भगवान
दुःख से घबराती है जान ॥टेक॥

मै मूरख पामर अज्ञानी, तेरी महिमा कुछ भी न जानी।
ठोकर खाता हुँ मनमानी, धनपुत्र के वश हुवा अज्ञानी।
भुल पडी है तेरे नाम की, रहा न कुछ भी ज्ञान।
कृपालु दे दो अब वरदान ॥१॥

कितनी आपत्ती मै पाया, दिवाने पनमे रहा भरमाया।
फिर संतान का मोह दिलाया, कुछ दिन बाद तुने छिन लिया
तिन पुत्र देकर के फीर भी, एक न रहा निशान ॥२॥
कृपालु दे दो अमर वरदान ॥२॥

कब तक अब तु मुझे भुलाता, मुझ पामर को राह न दिखाता
अब तो मैं दुःख सह नही सकता, आगे दिखा दो सत की रास्ता
नही छुट्टी हैं मर्त्य भुमी की, गर्भ गली बलवान।
कृपालु दे दो अमर वरदान ॥३॥

जैरामदास कहे कुछ बोलो, मुझको प्रभुजी अब अपनालो।
यह जिवन नैय्या को समजलो, दौडकर आकर पार लगालो
नही ममता धन दौलतकी, दो सेवा का वरदान।
जिससे हो जावे कल्याण ॥४॥

भजन २५ (तर्ज- राही मनवा दुःख की चिंता)

भाव प्रभुमें तू नहीं धरता, ये क्या करता हैं
व्यर्थ ही गप्पा लगाता है,
गल्ती खुद ही करता, प्रभु को झुट बनाता है ॥टेक॥

व्यसनो मे मन तेरा रहे, सत् कर्मो पर देता न ध्यान।
बेईमानी से चलते रहा, जीवन व्यर्थ किया नादान।
कैसे होगा तरना तेरा, अभिमान में मरता है ॥१॥
चारो धाम कें तिर्थ करे, बुरे कर्म तू नहीं छोड़े
मंदीर में जा पुजा करे, पर जीवों को तू छोड़े।
तु उलटी राह पे चलता है, सत् राह न धरता है ॥२॥
जटा बढ़ा सन्यासी बना, दौड़े तेरा मन विषयों में ।
काम क्रोध बेचैन करें, निती रही है फसाने मे ॥
मारा नही मन को दिवाने, नाहक भेष बनाता है ॥३॥
जयरामदास कहे मनवा, मन को निर्मल बना पहिले।
निर्मल मन से हरि को सुमर, तब प्रभु दर्शन देंगे तुझें।
अंतरे मन में ही निरखले तू, प्रभु पास में बैठा हैं ॥४॥

भजन २६ (तर्ज– वृंदावन का कृष्ण कन्हैया)

प्रभु सभी के पालन हारे, सबको दर्शन देते हैं।
जैसी जिसकी श्रद्धा है फिर, वैसा उसको मिलते हैं ॥टेक॥
भक्त जनो ने किया पुकारा, उनको पल मे उद्धारा।
अजब लीला है उस हरि हर की, सबके नैनों का तारा ॥
सबके उपर दृष्टि इनकी, सबका दुरा करते हैं ॥१॥
ग्राहने गज को जलमें खिचा गज ने तुम्हे पुकारा था।
सुनकर करुण पुकार भक्त की गज को तुमने उद्धारा था।
ऐसी है प्रभु नाम की महिमा, वेदशास्त्र बतलाते हैं ॥२॥
अजामीळ ने नाम पुकारा, उसको पल में उद्धारा।
पापी था फिर भी प्रभु तुमने, दिया उसे मोक्ष का द्वार ॥
जो कोई नाम पुकारे अंत में, वो तुमसे मिल जाते है ॥३॥

जयरामदास कहे तुम दयालु सब दुखों को मिटाते हो ।
जो जैसी करता है करनी, वैसा ही फल देते हो ।।
महिमा तुम्हारीं कोई न जाने बिरले तुमको पाते हैं ।।४।

भजन २७ (तर्ज– बार बार तोहे क्या समझाये)

राम कृष्ण गोविंद मुरारी, जय जय जगत अधार ।
यही नाम उच्चारण से, हो जावो भवपार ।।टेक।।
महामंत्र उच्चारण जो नर करते हैं।
जन्म मरण के फेरे से छुट जाते है :
नाम उच्चारण करे जो प्राणी, तन मन से एक बार ।।१।।
नाम उच्चारा वाल्या का वाल्मीक हुआ ।
मरा मरा से राम राम उच्चार हुआ ।।
ऐसी महिमा राम नाम की पायी तरे हजार ।।२।।
दामाजी पर बिपत पड़ी थी बड़ी भारी ।
दौड़कर आये भक्त वत्सल गिरधारी ।।
भेस बदल कर कुंडी चुकाये, बनकर विठू महार ।।३।।
पतीत पावन करने वाले सीताराम ।
पाये अजामिल जैसें मुक्ति लेकर नाम ।
इतना करना स्वामी जी, जयराम न भुले नाम ।।४।।

भजन २८ (तर्ज– नील गगन के तले)

संतो की राह चले, उसके ही भाग्य खुले ।
रहकर जग में जग से निराले, ज्यो जल कमल खिले ।।टेक।।
संतो की बानी हिय में धरके, भक्ति के पथ पर चले ।।१।।

उनको न जग में कोई कमी है, सारे फल भी मिले ॥२॥
सदा रहे जो मग्न प्रभु में, ब्रम्हानंद में डोले ॥३॥
सुख दु:ख मे जो आनंद मनाये, प्रभुजी उसको मिले ॥४॥
चंदन जैसा झिजे उसकी, किर्ती जग मे चले ॥५॥
दुष्ट व सज्जन मिट्टी व सोना, एक तुला तोले ॥६॥
कहता जयराम भक्ति की महिमा, संत संग मेही मिले ॥७॥

भजन २९ (तर्ज- नैन का चैन चुराकर)

काम करो और मिलके रहो तुम, सुधारो अपना ग्राम हो।
अस्पृश्यता को मनसे हटावो, सतकर्मो में प्राण जुटाओ ॥
समता से करो काम ॥टेक॥
आजादी मिली है हमको, मुफ्त ना गमाओ समय को।
सब कोई अपना हाथ बटावो, अमर रहेगा नाम हो ॥१॥
सेवक बनकर काम करेंगे, मातृभूमिका ऋण हरेंगे।
तन मन सेवा में अर्पण करेंगे, तभी मिले सुख धाम हो ॥
समाज शिक्षण लेकर सबही जीवन सफल करो तुम भाई,
मिटेगा अज्ञान भेदभाव का, बैठो नहीं बेकाम हो ॥३॥
झगडे तुफान दूर करके, दया शांति को मन में धरके।
एकता से व्यवहार करो सब, मिटेगा क्लेश तमाम हो
ऐसे नियम कों सब अपनालो, प्रेम भाव नित नियम बनालो ।।
सेवा भाव को मन में बसालो, कहता है जैराम हो ॥५॥

भजन ३० (तर्ज- राम पियारे थे रखवारे)

देश पियारे थे रखवारे, जनता पुकारे प्यार से
बापू, बापू, बापू ॥टेक॥

पराधीन की बेड़ी तोड़कर, आजादी दिलवायें ।
उंच नीच का भेद मिटाकर, शांति का संदेश दिये ।
मानव धर्म अधारे ॥१॥

सत्य अहिंसा अपना कर, खादी को चलाये ।
संगठन के पूजक बनकर, द्वेष भाव मिटाये ।
दुखियों के रखवारे ॥२॥

वस्त्र हिन को वस्त्र दिलाकर, खादी भूषण धारे ।
तन मे लंगोटी और एक चादर, चले लाठी के सहारे ।
दु:ख भोगे हो सारे ॥३॥

झूठ अन्याय के बड़े विरोधी, सत्य ही ईश्वर माने ।
तन मन धन अर्पण करके देश को, शांति अहिंसा जाने ।
जैराम तुमको पुकारे ॥४॥

3545 21

भजन ३१ (तर्ज- नौजवान जाग जानारे)

किसान भाई जाग जाना रे ।
आलस को त्याग देना रे ॥टेक॥
आज तक के कपटीयों नें तुझको भुलाया ।
लूट लूट के तेरे धन को जो खाया ।
कपटीयों को छोड़ देना रे,
सत्य सेवा में लग जाना रे ॥१॥

नहीं मिलता है वस्त्र और दाना ।
रहने और खाने को नहीं है ठिकाना ।
अब तो भी सम्भल जाना रे,
गफलत में नहीं रहनारे ॥२॥

आया है भाई अब ऐसा जमाना ।
जो ज़ोते खेति, वोहि किसान
संत विनोबा का कहना रे ।
इस पर तू ध्यान देना रे ॥३॥
जैराम कहे लगावो सत्य का नारा,
तब लगे भारत की नाव किनारा,
अग्यान को हटा देना रे,
राम राज्य का निशाना रे ॥४॥

भजन ३२ (तर्ज– वृंदावन का कृष्ण कन्हैया)

भाव भक्ति दृढ़ मन में रखकर, जो कोई सेवा करते है ।
उनके वश में प्रभुजी होकर, काम उन्ही के करते है ॥ टेक ॥

ध्यान उन्हीं का जो कोई धरते,वही प्रगट हो जाते हैं ।
चक्र सुदर्शन कर में लेकर, गरूड़ सवारी आते हैं ॥ १ ॥

छल कपटी दुष्टों को जानकर, दूर दूर प्रभु रहते हैं ।
उनका सारा गर्व मिटाकर, लाज भक्त की रखते हैं ॥ २ ॥

धर्म परीक्षा हरिचंद्र की विश्व मित्र ने ली आकर ।
खुद बिककर दक्षिणा चुकाये, सच्चे नहीं मुकरते हैं ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे ए हैं, भक्त जनो के हितकारी ।
देकर सुदामा को कंचनपूर, है भक्त वत्सल गिरधारी ॥ ४ ॥

आशीर्वाद

भजन ३३ (तर्ज– ना मैं भगवान हूँ ना मैं)

जग में इन्शान है, जो जग की शान है
सच्चे कर्मों से भैया, धर्म का निशान है ।। टेक ।।
नेक काम करे कोई, दया क्षमा रखकर भाई,
अष्ट प्रहर मस्त रहता, प्रभु के चिन्तन में ही,
उसे ना गुमान है सुख दुःख समान है ।। १ ।।
तन को झिजावे, अपने, दूसरो के खातिर,
प्राण कुर्बान करे, दुसरो के खातिर
ऐसा जिसका ध्यान है, वही पूज्यवान है ।। २ ।।
जीव तो सभी एक है, ईश्वर के अंश है ।
कर्तव्य से भूल पड़ी अपने को भूले हैं ।
ना मानवता का ज्ञान है, ये भूले शैतान है ।। ३ ।।
है मृग नाभि कस्तूरी, फिर भी घुमें दूरी दूरी,
अज्ञानता में घूम रहा, घूम रहा चहुँ फेरी,
जब ये अज्ञान है, खुद की ना पहिचान है ।। ४ ।।
वेद में लिखा है, देती गवाही गीता हैं,
कृष्ण ने अर्जुन से कहा, मेरा सब में निवास है,
जैराम जो जाने उसको, उसी का कल्याण है ।। ५ ।।

आशुकविता
३५६९१

भजन ३४ (तर्ज– तेरे प्यार का आसरा)

संस्कार सबके एकसे नहीं है ।
जैसी जैसी संगत जिसने जिसने की है ।। टेक ।।
वैसी ही भाग्य रेखा, बनती है उनकी ।
सुख दुःख मिलते हैं, जैसी करनी है जिसकी ।
लिखा जो विधी का कभी, टलता नहीं है ।। १ ।।

कोई बने सत् संगी, कोई दुराचारी ।
कोई बने योगी भोगी, कोई ब्रह्मचारी ।
किसी से किसी के, मिलते नहीं है ॥ २ ॥
शंकाने डाला है, जीव पर घेरा ।
मोहनी अपना, फैलाये पसारा ।
तड़फ रहा जीव उसको, ठिकाणा नही हैं ॥ ३ ॥
एक मां के च्यार बेटे, है भाई भाई ।
तीन व्यभिचार क़रें, करे एक भलाई ।
संस्कार कितने बदले, चारों नही हैं ॥ ४ ॥
संस्कार कितनें भी, गिरे हों किसी के ।
करे संत संगत, बनेंगे उसीके ।
जैराम सत्संग से कुछ, दुर्लभ नहीं हैं ॥ ५ ॥

भजन ३५ (तर्ज– गेला हरि कुण्या गावा)

खेती को जोतेगा कोई, बनेगा खुद मालिक वोही ।
पडित भू रहने ना पाई, जागृत हो जाना आया है जमाना ॥टेक॥
मेहनत करो तन मन से, उपजावो अन्न उन्नत से ।
गुजारा होगा आनंद से, ध्यान तुम देना,
आया है जमाना ॥ १ ॥
त्यागो आलस को भाई, कर्ज से हुये त्राही त्राही ।
बच्चों को अनाज मिलता नहीं, बैठे नहीं रहना ।
आया है जमाना ॥ २ ॥
किसान भारत का सरताज, उसके पिछे चलता है राज ।
रखो तुम मात्र भूमि की लाज, जीवन सुख पाना,
आया है जमाना ॥ ३ ॥

देश भक्त और सन्यासी, जपी, तपी और गृहवासी।
करते हैं मौज और खुशी, इसी के पिछे चलना,
आया है जमाना ॥ ४ ॥
जैराम कहे ऐसी भूमि भाई, सेवा से होगी भलाई।
उसीने दूध पिलाई, जागृत हो जाना,
आया है जमाना ॥ ५ ॥

३५/२१—

भजन ३६ (तर्ज— मैं एक नन्हासा)

खोते जाते हैं प्रेम भाव को, देता नही कोई ध्यान।
कि, धर्म की राह भूले ॥ टेक॥
निती धर्म को भूलके सारे, बुरी राह अपनाते।
अभिमान की करते है बातें, अपनी अपनी बनाते।
निती जा रही, अनिति आ रही, इसका नही है ज्ञान ॥ १ ॥
जिधर उधर विद्रोह हैं फैला, कोई किसी को न माने।
हर संकट से देश घिरा है, इसको कोई न जाने ॥
छोड़े अपनी रीत, करे गैर की प्रित, छोटे बड़ो का न मान॥ २ ॥
कोई कहता इस दुनिया में, हम ही कर्ता धर्ता।
इस जग में ईश्वर ही नही है, नहीं ईश्वर से डरता ॥
मन में नहीं विश्वास, करता है बकवास, कहता है मैं बुद्धिमान ॥३॥
मानव ही जब प्रभु को भूला, भूला उसकी सत्ता।
प्रभु के हुक्म बिना नही हिलता, डाली का एक पत्ता ॥
करलो सोच विचार, वोही जगताधार, जिसने दिया जीवदान ॥४॥
कंटकमय है सतके पथपर, येही शांति दिलाये।
सत्य ही रुप स्वरुप प्रभुका, क्यों मन को भरमाये ॥
कहता है जयराम, भजलो सीताराम, मन से हटालो अग्यान ॥५॥

भजन ३७ (तर्ज – राही मनवा दुःख)

राही मनवा धर्म की, रक्षा क्यों नही करता है ।
धर्म तो डुबा जाता है ।
सत्य ही तेरा साथी, वही नही ध्यान तू देता है ॥ टेक ॥
निती नियम से चलते जा, दया शांति तू हृदय में धर ॥
तन मन धन को अर्पण कर, मनमें अपने प्रभु को सुमर ॥
इससे ही रहेगा धर्म तेरा, क्यों भूला जाता है ॥ १ ॥
सुख दुख दोनो साथी बने, इससे कभि घबराना नही ।
जीवन देकर खेल रचा, सत्ता है प्रभु के आधिन ही ॥
तू छोड़ दे सारी भ्रमना क्यों गोता खाता है ॥ २ ॥
कर्म तेरे तू करते जा, समय का ध्यान तू रखते जा ।
होनहार कभी नहीं टलती सत पथ को लेके चलते जा ।
धन पुत्र में भुलारे दिवाने, झुठा साथ पकड़ता है ॥ ३ ॥
जैरामदास कहे मनवा, मानले अब तू कहना मेरा ।
पल घड़ी का न भरोसा है, उड़ जायेगा हंसा तेरा ॥
अभिमान छोड़ दे दिवाने, क्यों फूला जाता है ॥ ४ ॥

भजन ३८ (तर्ज–जय मंगल गणराज हमारे)

जिन लोचन ने राम को चिन्हा, वो नर नाम जपे न जपेरे ॥टेक॥
मन जिसका है स्थिर हुआ, चंदन जैसे देखे जगको ।
रहकर सबमें सबसे निराला, देखे सम सब जीवों को ॥
कोई सतावे नर जो अभागि, ना कुछ उनपे तपे न तपेरे ॥१॥
कागज की तो बनाई माला, बगले को एक तारी ।
मीन की गती मीन ही जाने, काम न होत शिकारी ॥
कर्म ये न्यारे होत सभीके, छुपाने से भी छुपे न छुपेरे ॥२॥

दुध अन्य का होता पर, गऊं दुध की तुलना करेना ।।
इंद्रायन है श्याम सलोना, दुर्गुन से वो पार परेना ।।
जयरामदास गुरू का प्यासा, बिन करनी के सधे न सधेरे ।।३।।

3५६२1
भजन ३९ (तर्ज–प्रभु का नाम सुमर)

नहिं पिर भरी जिनके हृदय, फिर प्रभु को भजना नाहक है। टेंक।।
स्थिर नहीं है मन जिसका, फिर ग्यान बताना नाहक है ।।१।।
प्रपंच जिसका सधा नहीं, परमार्थ को करना नाहक है ।।२।।
सेवा करना सिखा नहीं, फिर सेवा दिखाना नाहक है ।।३।।
ब्रह्मज्ञान की बात बतायें, आतम तत्व को लखा नहीं ।।४।।
लक्ष भेदन सिखा नहीं तो, ध्यान लगाना नाहक है ।।५।।
शास्त्र को पढ़कर राम न चिना, तो पाठ करना नाहक है ।।६।।
जयराम कहे गुरु शद्व न पाया, उसका जिना नाहक है ।।७।।

भजन ४० (तर्ज– बहारो फुल बरसाओ)

3५६२1
गरीबों के दुखी दिलकी, आह मत लो ऐ धनवानो ।
तुम्हारे पास जो धन है, वो सब गरीबों का ही जानो ।।टेक।।

आ गया समय गरीबों का, समय की ही दुहाई हैं।
देते आवो मदत थोड़ी, तभी तुम्हारी भलाई है ।
छोड दो गर्व गुमानो को, गरीबो की दया जानो ।।१।।
रहेगा नाम अमर जगमें, सेवा का मार्ग अपनालो ।
सारी ये दौलत ईश्वर की, दिलमें तुमही समज पालो ।
जैसा जो कोई करेगा काम, उसीको धनवान तुम जानो ।।२।।

बढ़ावो कदम को आगे, कभी कुछ सार मिल जायेगा।
जनताकी सेवा करेगा जो, वही अमर पद पायेगा।
माया के वश मे मत भुलो, सभी जीव एक ही जानो ।।३।।
"जैरामदास" समझता है, सत्य की राह धर भाई।
नेक कर्मो को ही करना, यही मानव की मानवताही।
छोंड दों तुम असत्य पथ कों तुम, इसीमे आगे भला जानों।।४।।

भजन ४१ (तर्ज–गरीबोंकी सुनो वो तुम्हारी सुनेगा)

तुम दुखियो की सुनो भगवान मिल जायेगा।
पराई पिर हरलो वही साथ मे आयेगा ।।टेक।।
तड़प रहे जीवोंपर जो कोई मनसें ध्यान देता है।
वोही मानव इस दुनिया में, पूजक सबका बनता है ।।
किर्ती छोड़कर यहाँ से जो जाते वोही नर प्रभु मे लीन होते
होगी कभी न इनकी झुठी निती, चाहे प्राण भी तनसे जाये ।।
सेवा धर्म में मन को लगाये, वो ही नर तर जायेगा ।। १ ।।
छल और कपट को छोड़कर जो कोई निष्काम कर्म करते है।
सभी जीवों को मित्र समझकर, हरदम जनहित करते है।
दु:ख सुख में तुम प्रभु को न भूलो तनमय होकर उसीमें डोलो।
समय जो मिला है सेवा का भाई, निकलने न पाये सम्हालो सम्हालो।
सेवा धर्म को जो कोई जाने वो हरि दर्शन पायेगा ।। २ ।।
दीन दुखी जन की ही सेवा, जो भी इसे अपनायेगा।
भाग्य हीन कितना भी हो, वह संत चरण जायेगा ।।
संत वचन को जो कोई निभाये संसार सागरसे वह तर जाये ।।
कहता जैरामदास भुलो न कोई कर्म तुम्हारे करते रहो भाई
जन्म जन्म का जीव भूला है, हरि बिन शांति न पायेगा ।। ३ ।।

भजन ४२ (तर्ज– बहारो फुल बरसावो)

अगर है शौक मिलने का, तो प्रभु से लव लगाते जा।
छोड़कर सारी झंझज को, हरि में मन को रमाते जा ।। टेक ।।
जाना है सत्य के पथ पर, प्रेम की राह चलते जा।
छोड़ दे सारी बुराई को, जीव सब एक समझते जा।
इसीमें तेरी भलाई है, भाव मन एक करते जा ।। १ ।।
अन्यथा भाव को एक कर, मिलेगा तुझको तब ईश्वर।
व्यर्थ गप्पा लगाता क्यों, देह सारा सभी नश्वर।
बदल दे अपने विचारों को, गुरू चरण ध्यान धरते जा ।।२।।
धरा क्या तिर्थ यात्रा में बसी मूर्ति शिला की।
अनाड़ी बनके घुमे मत, भुला है सुध बुध काया की।
संतो का संग पकड़ करके, किनारे नाव लगाते जा ।।३।।
जयरामदास कहता है, बात पर प्यारे रख तू ध्यान।
घट घट में भरा है प्रभु, लगाकर सुर्ति से पहचान।
खेल सब तत्व का सारा, तत्व से आगे बढ़ते जा ।।४।।

भजन ४३ (तर्ज– कंकरिया मारके जगाया)

नाम तेरा राधा रमैया, है बंशीधर नटवर कन्हैया।
मोहना है बड़ छलिया ।।टेक।।
जमुना स्नान करन, जाती राधा रमन।
छोड़ जमुना के घाट, चली वृन्दावन ।।
तेरी मुरली की तान ने भुलाया ।।१।।
दही दुध बेचन चली, संग में थी सहेली।
आके ग्वाले के संग, मटकी फोड़ डाली ।।
सारे गोरस को, धुल में मिलाया ।।२।।

एक दिन लिला धारी, बने सुन्दर नारी,
छलने राधा को गये, बन के मनीहारी ।।
प्यारी राधा को चुड़िया पहनाया ।।३।।
नित नये रुप धरे, नित नई लिला करे ।
तेरी लिला का कहांतक बखान करे ।।
अंश रुप में जयराम ने सुनाया ।।४।।

भजन ४४ (तर्ज– ज्योत से ज्योत)

श्रीराम जैराम गाते चलो ।
मुक्ति का मार्ग बनाते चलो ।।टेक।।
मुश्किल से यें नरतन पायें, अवसर य न गमावो ।
जितना हो सकता जीवन में, हरि के गुण को गावो ।।
इन षड विकारों से, बचते चलो ।।१।।
राम नाम से कितने ही तर गये, वाल्या अजामिल जैसे ।
बिष का प्याला पि गई मिरा, ले हरी नाम ह्रदय से ।।
कर काम मुख राम भजते चलो ।।२।।
स्वार्थ के साथी इस दुनियां में, अंत में, कोई न होगा ।
होगा साथी राम नाम यही, तुझको दगा नहीं देगा ।।
श्रीराम महिमा समझते चलो ।।३।।
है जयराम खड़ा चौराहे, सबको ये ही बताये ।
राम नाम बिन और न दुजा मुक्ति मार्ग दिखाये ।।
महा मंत्र है इसे जपते चलो ।।४।।

भजन ४५ (तर्ज– दो दिवाने दिलके)

ये मेरा मेरा कहके, आशा तृष्णा मे बहके ।
खोया है खोया है, ये जीवन बेकार ।।टेक।।

आया है करके तूने, बड़े बड़े वादे ।
आते ही इस दुनियां में बदले इरादे ॥
बदला है वादा करके, गुण गाये ना रघुबर के ॥१॥

पहले कमाया था जो, तेरे काम आया ।
फल है उसी का तूने, नर जन्म पाया ॥
बैठा है भूल करके, हाथो पे हाथ धरके ॥२॥

किसके लिये तुने, धन को कमाया ।
किसके लिये तुने, महल बनाया ॥
आयेगा काल चलके, जायेगा हाथ मलके ॥३॥

सत्य और असत्य की, पहिचान करले ।
है दिन चार जीवन के, अमर नाम करले ॥
मिथ्या जीवन जी करके, सोया है निंद भरके ॥४॥

यदि चाहता है तू, मिटे आना जाना ।
जयराम ऐसा समय ना गवाना ॥
सतुगुरु चरणों को धरके, भवसागर पार करके ।
चलाजा, चलाजा, जहाँ है ओंकार ॥५॥

34621

भजन ४६ (तर्ज–कहीं बिते ना ये राते)

काहे भुले रे नादान, छोड़ दे रे बुरे काम ।
लेता रहे, हरी नाम, आये तेरे येही काम ॥टेक॥

अरे गलती खुद करता है, कहता है ईश्वर झुठा ।
अज्ञानता से तुही, हरदम जाता है लुटा ॥
सत्कर्मों को भूल गया है, भूला है हरिनाम ॥१॥

ये आजकल के लड़के, विषयों में ध्यान धरते ।
आदर और अनादर की, जरा फिकर नहीं करते ॥
धर्म नीति को छोड़ दिये हैं, छोड़ दिये ईमान ॥२॥
घर घर में गाये जाते, अश्लीलता के गाने ।
गैरों की नकल करने में, अपना सौभाग्य ही माने ॥
अपनी परंपरा को खुद ही, करता है बदनाम ॥३॥
साधु चुर भांग गांजे में, और पडीतजी खाने में ।
मंदिर का पुजारी, है अपनी ही बनाने में ॥
मंदिर देखो अस्त व्यस्त है, नहीं चलता हरि नाम ॥४॥
सत संगत गुरु कृपा से, जो ज्ञान पा जायेंगे ।
श्री राम नाम को भजते, भवसागर तर जायेंगे ॥
अबभी अपनी भूल सुधारो, समझाये जयराम ॥५॥

भजन ४७ (तर्ज– पायल की झकार)

पाये है भगवान भजते भजते
वीरों ने दिये प्राण लड़ते लड़ते ॥
पाखंडीने उमर बिताई, छलते छलते ॥टेक॥
बुराई का बदला, बुरा ही मिलेगा ।
जो करनी करेगा, फल वोही पायेगा ॥
जागो आज मेरे यार, करो कुछ विचार ।
होना है भवपार गाते गाते ॥१॥
अकेला ही आया है, अकेला जायेगा ।
धन दौलत ये कुछ भी न, काम आयेगा ॥
हो जा अब भी तू होशियार, माया में ना सार ।
धर्म से होगा पार करते करते ॥२॥

रखेगा तू द्वेश तो, शैतान दिखेगा ।
जैसा तेरा है भाव, वैसा ही तो मिलेगा ।
जैसा जो करे व्यवहार, बनता है करतार ।
करता पुरण काम हंसते हंसते ।।३।।
कहता है जैराम समदृष्टि रखेगा ।
सब जड़ और चेतन में तू ही दिखेगा ।
कर विचार, हो तैयार, जीवन सुधार ।
हो जाना भव पार हंसते हंसते ।।४।।

३५६ २१

भजन ४८ (तर्ज– तेरे पूजन को भगवान)

पति की सेवा करने आज, ए बहनो मत रखना कुछ लाज।।टेक।।
पति बिन सुना है संसार, पति बिन जीवन है बेकार ।
पति बिन गति नहीं संसार ।।१।।
पति ही पिता है, पति ही माता, पति ही समझो तुम्हरे विधाता
पति है जीवन का आधार ।।२।।
मित्र पति है, गोत्र पति है, सुत्र पति है, छत्रपति है ।
पतिही है सोलह सिंगार ।।३।।
पति की आशा जो कोई पाले, वो ही यम के तोड़े ताले ।
वों ही सति कहावे नार ।।४।।
पति व्रत धर्म जो नारी निभावे, कहे जैराम वो धन्य कहावे ।
वो ही हरे पृथ्वी का भार ।।५।।

भजन ४९ (तर्ज– बड़ीं देर भई नंदलाला)

जग डूब रहा है सारा, प्रभु तुम बिन कौन सहारा ।
धर्म कर्म सब भुल गये है, भुले नाम तुम्हारा हो ।।टेक।।

दर्शन बिन हम तरस रहें हैं, छबि तुम्हारी निहारन को ॥
अब तो आवो लाज बचानें, दुखियों के दुख निवारन को
बड़ी देर हो रही मुरारी, धिरज छुटे हमारा हो ॥१॥
अन्न वस्त्र से तरस रहे हैं, कितने ही ये नर नारी।
फैल रहीं है सब ही तरफ से, घुसखोरी और व्यभिचारी
इनको सुधबुध दो गिरधारी, डूब रहे मजधारा हो ॥२॥
गौवे तुम्हें पुकार रही हैं, आवो रक्षा करने को।
काट रहे निर्दयीं कसाई, आवो विपता हरने को ॥
कहां गये गोपाल लाल तुम, मिट रहा वंश हमारा ॥३॥
तरस रहे हैं सभी भक्त जन, कहाँ छिपे बंशीवाले।
देख रहे क्या अंत प्रभु तुम, हो भक्तों के रखवाले।
आवो श्याम जयराम पुकारे, नांव लगादो किनारा हो ॥४॥

भजन ५० (तर्ज– तेरे पूजन को भगवान) ३५९२१

समय यह बदल गया है यार।
अब तुम हो जाना तैयार ॥टेक॥
जैसे मिले, वैसा ही मिलना, जैसा माँगे वैसा देना।
मिलेगा तभी जीवन का सार ॥१॥
गुन्डो से तो गुन्डा होना, ग्यानी से तो ग्यानी होना।
निभावो भाई प्रेम व्यवहार ॥२॥
अब तो बढ़ गई है घुसखोरी, धर्म को छोड़ बने व्यभिचारी।
इसमें नही है कुछ भी सार ॥३॥
जैरामदास कहे सुनो प्यारे, सत्य कर्मो के लगावो नारे
उतारो भारत का यह भार ॥४॥

३५६२१

भजन ५१ (तर्ज– गेला हरि कुणा गावा

पीता शराब का प्याला, होता नहीं किसीका भला ।
यह है शराब वाला, यह है प्याला, प्याला है जहरीला ॥टेक॥

जो कोई सेवन करे इसको, अपने बसमें करे उसको ।
बुरे मार्ग को ले जावे, देह की सुधबुध भुला ॥१॥

हुई बुद्धि भ्रष्ट इससे, वह लगा बुरी बात बकने ।
किसी को जरा नहीं माने, मानवता को वह भूला ॥२॥

सरपर खडा हुआ शैतान, धन पैसों से हुआ हैरान ।
बाल बच्चों पर दिया नहीं ध्यान, भाई बिगड़ते चला ॥३॥

जर जर हुआ इसका जीवन, घर में खाने नही है अन्न ।
सुखते चला इसका तन, श्वास बना है खोखला ॥४॥

लखपति बने है कंगाल, उनके बुरे हुये यह हाल ।
खाने मिलता न आटा दाल, घर घर भिख मांगने चला ॥५॥

जैराम कहे जाग भाई, हुई ना इसमें भलाई ॥
ऐसी है यह शराब भाई, अच्छा भी बनता है बुरा ॥६॥

३५६२१

भजन ५२ (तर्ज–बार बार तोहे क्या)

मेरा मेरा कह कर प्यारे, कर न समय बेकार ।
अंत समय में देगा दगा परिवार ॥टेक॥

जनम जनम में चक्कर तुने खाया है ।
मुश्किल से ये नरतन तूने पाया है ।
तेरा मेरा छोड़ चला जा, संत चरण एकबार ॥१॥

काम क्रोध और मोह लोभ के फांसे है ।
ये सब तुझको देते झुट दिलासे है ।
घड़ी घड़ी वो भुला रही है माया ठगनी नार ॥२॥
भूल गया संसार के सुख में ख्याल नही ।
भुल गया निज धर्म कर्म को ख्याल नहीं ॥
क्या जवाब देगा आखिर में, इसका करले विचार ॥३॥
संतो के अनुभव पे धरले ध्यान जरा ।
संतो के उपदेश से करले ग्यान जरा ॥
पार करेंगे सत्गुरु लहरी, देकर चरणाधार ॥४॥

भजन ५३ (तर्ज- मैं राधिका तुम्हारी) 3 ऽल्पा

मैं दास हूं तुम्हारा, भगवन शरण में लेना ॥टेक॥
दर दर भटक रहा हुं, तेरे सिवा न कोई ।
कई जन्म का दुखियारा, मुझपर तो कृपा करना ॥१॥
तेरे दीदार खातीर, आया हुं मैं भिकारी
फैलाया हुं मैं झोली, दरशन की भीख देना ॥२॥
तेरे पूजा के खातीर, नही है वस्तु कोई ।
सुझे न मुझको कोई, क्या तुझको मैंने देना ॥३॥
छिप छिप के कब तलक, अब तरसाते रहोगे ।
शक्ति नही हैं मुझमें, भक्ति का ग्यान देना ॥४॥
तेरे ही कृपा से मैं, तेरे ही गुण को गाऊं ।
सत मार्ग ही बताना, कुछ भेद ना छुपाना ॥५॥
ज़ैराम आधिन तेरे, तेरा ही है सहारा ।
अंतिम समय पर भगवन, बस तुम ही साथ देना ॥६॥

भजन ५४ (तर्ज– सा. बढाई में जाकर)

सच्चे दिल की पुकार सुनकर, प्रभु दौड़कर आते है ।
काम उनके पूरण करके, दिलासा उनको देते है ॥टेक॥

छल कपट की बात सुनकर, दूर दूर भाग जाते है ।
गर्व गुमान उनके मिटाकर, लाज भक्तो की रखते हैं ॥१॥

सुदामाजी के सुखे पोहे, बड़े प्रेम से खायें थे ।
सबरी कुब्जा नार अहिल्या, इनका उद्धार किये थे ॥२॥

रावण का वह गर्व मिटाकर, संहार उसका किये थे ।
जनाबाई के साथ उन्होने, चक्की आकर पिसे थे ॥३॥

जहर का प्याला मीरा पी गई, उसको प्रभु ने उबारे थे ।
दुर्योधन का मेवा त्यागकर, साग विदुर घर खाये थे ॥४॥

प्रेम के वश में है प्रभुजी, प्रेमी को मिल जाते है ।
जयराम कहे प्रभु अपने, भक्तों के वश में हो जाते है ॥५॥

भजन ५५ (तर्ज– रेशमी सलवार)

देखते बदला है रंग जमाने का ।
सत्य को ना माने हाल यह लोगों का ॥टेक॥

दही दूध किसी को न भाये, मदीरा और मास सुहाये ।
साधु भी स्वार्थ अपनाये, दुष्कर्म से धन को कमाये ।
हाल यह लोगों का ॥१॥

दिन रात कमाई करता, इमान को लेकर चलता ।
आज वोही भूखा मरता, उसे कोई सहारा न देता ॥
हाल यह लोगों का ॥२॥

ये धर्म नीति को छोड़े, पुरखों के वचन को तोड़े।
बेटे हैं पिता से सयाने, बहु मारे सासपर ताने।
हाल यह लोगों का ॥३॥

शास्त्रों को झुठे ठहराते, बुरे कर्मो से नहीं डरते।
मन चाहे वैसा चलतें, विषयों में ही मगन रहते॥
हाल यह लोगों का ॥४॥

ये दो दिन की है चमकी, ठग देते सत्य को धमकी।
यह चाल नहीं चलने की, जैसी गति हुई रावण की॥
हाल यह लोगों का ॥५॥

यह कर्म भूमि है भाई, जैसा कर्म करे जो कोई।
ये गीता देती गवाही, जयराम सम्हल जा भाई॥
समय है मुश्किल का ॥६॥

भजन ५६ (तर्ज– वह रोया पड़ा अर्जुन)

जब भुखी पड़ी रे जनता, प्रभु कैसी ये ममता है।
अन्न वस्त्र से तड़फ रहे, प्रभु कैसा ये इन्साफ है॥ टेक॥
दुर्दशा हो रही भगवन, कैसे धीर धरे अब हम
तेरे बिना सुना ये संसार, नैया कौन लगाय पार॥ १॥
दिनो दिन पड़ रहा, अक्काल, कहीं आ रही है बाढ़।
चारों ओर मचा है हाहाकार, प्रभु कैसा ये खेल रचा॥ २॥
फैल रहा है भ्रष्टाचार, धर्म नीति का छोड़े विचार।
धीर देने तुम आवो हरि, तब क्लेश मिटेगा तमाम॥ ३॥
कैसी लेते कसौटी भगवन, अंत लगता नही है तेरा।
बिपत पड़ी थी सुदामा पर, आकार धैर्य दिलाये थे॥ ४॥

दौड़ें आवो कहे जैराम, देने भक्तों को विश्राम ।
सुनो अर्ज मेरी घनश्याम, दुख के बंधन तोड़ो राम ॥ ५ ॥

भजन ५७ (तर्ज– जादूगर सैंया पड़ूं मैं)

मानव धर्म सिखाने को, द्वेश भाव मिटाने को ।
आवो मेरे भगवान, तुम बिन सुना जहांन ॥ टेक ॥
भारत में जब अधर्म बढ़ा था, तब तब तुम थे आये ।
अग्यानता को मिटाकर सारी, सत्य राह दिखलाये ।
बचाये भारत की शान, तुम बिन सुना जहान ॥ १ ॥
दुर्योधन ने गर्व किया था, उनका गर्व मिटाये ।
अर्जुन के सारथी तुम बनके, महा भारत करवाये ।
मिटाये दुष्टों का अभिमान, तुम बिन सुना जहान ॥ २ ॥
जिधर उधर विद्रोह कलह है, फैल रहा भारत में ।
गुन्डागिरी और घुसखोरी, व्यभिचारी घर घर में ॥
इनसे रक्षा करो भगवान, तुम बिन सुना जहांन ॥ ३ ॥
रक्षक है वो भक्षक बन गये, करते अत्याचारी ।
मानव होकर दानव बन गये, ये मानव तन धारी ॥
कैसे बचे भारत की जान, कि तुमबिन सुना जहांन ॥ ४ ॥
इमानदारी कुचली जा रही, झुठा मौज उड़ाये ।
गांजा दारू भांग बढ़ रहा, कोई रोक न पाये ॥
बचावो भक्तों के भगवान, कि तुम बिन सुना जहांन ॥ ५ ॥
जल्दी आवो भू भार उतारो, हरलो क्लेश तमाम ।
दुखियों के तुम बंधन तोड़ो, कहता है जयराम ॥
नही देर लगावो भगवान, कि तुम बिन सुना जहांन ॥ ६ ॥

भजन ५८ (तर्ज– तू प्यार का सागर)

तेरे दर की राहों पर, कई कई ठोकर खाया मैं ।
मंजील तो मेरी दूर है, अब तो कैसे आऊं मैं ॥ टेक ॥
मन ने मेरे साथ न दिया, बीच में ही घबराया ।
कुछ भी ना सुझे मुझको, राह सीधी बतलावो ।
दिन रात लगी है चिंता, कैसे तुझको पांऊ मैं ॥ १ ॥
दुनियां है मतलब की साथी, अपने गरज के लिये ।
स्वार्थ साधन की बतलाये प्रीति, मोह के पास में बांधे ।
छोड़ें न पिछा मेरा, दिखता ना उद्धार कोई ॥ २ ॥
कदम जहां पर रखता हूं, कांपते हैं मेरे पैर ।
इस मतलब की दुनिया में हैं, सबही तरफ अंधेरे ।
इनसे हो गया मैं बेजार, यह अकल न करती काम ॥ ३ ॥
यह संसार है बड़ा बुरा, मौत सामने मंडराये ।
जो करना था कर ना पाये, मन मेरा घबराये ।
जियरा यह तड़प तड़प कर, पागल सा बन जाये ॥ ४ ॥
प्यासा हूं मैं जनम जनम का, बुझावो मेरी प्यास ।
जयरामदास शरण में आया, पुरी करो मेरी आस ।
आया हूं भिकारी बनके, तेरा ही सहारा है ॥ ५ ॥

भजन ५९ (तर्ज– तू प्यार का सागर)

हरि तेरी मुरलीने, मेरे दिल में जादू भरी ।
सुध बुध सब भुल गई, सुनते ही बंशी तेरी ॥ टेक ॥
दही बेचन को जाती मथुरा, मार्ग भुल जाती ।
जहां वहां छबि दिखती तेरी, नटवर गिरधारी ॥
मधूर मधूर तेरी मुरली की, धुन में है जादू भरी ॥ १ ॥

दृष्टि मेरी जिस ओर जाये, तू ही तू दिखता है ।
तेरे बिना मन नही भाये, मन मोहन गिरधारी ॥
काम काज सब भुल गई, हो गई दिवानी ॥ २ ॥
क्या कहेंगे घर के सब ही, नन्हा घर में ही ।
सास ससुर मेरे क्या कहेंगे, देंगे मुझे गाली ॥
प्रभु अपनी बंशी संभालो, मोहे अब घर को जाने दो ॥ ३ ॥
तेरे लिला को मैं क्या जानू, मैं हूं मूढ़ अनाढ़ी ।
कहे जयराम तेरी लीला का, अंत किसने है जाना ॥
भुले को अब राह दिखावो, प्रभु यह अर्ज सुनो मेरी ॥ ४ ॥

३५६ ४१ भजन ६० (तर्ज – तेरी प्यारी प्यारी सुरत)

प्यारे इस सुन्दर जीवन को, मुक्त में गमाया नहीं जरा तू सुन ।
मुस्किल से पाया नरतन ये, इसे बेकार खोना नहीं
जरा तू सुन ॥ टेक ॥
अवसर मिला प्रभु दर्शन का, समय न ऐसा फिर आने का ।
जाग जाग तू मेरे भाई, वक्त नहीं है खोने का ।
चल उठ प्रभु ध्यान लगाले तू, होगा तेरा उद्धार
जरा तू सुन ॥ १ ॥
कई संत मुनी यहां आकर कें, तन मन सेवा अर्पण करके ।
द्वेश भाव हटाकर सबका, मार्ग सच्चा बताकर के ।
गये छोड़ वो अपना नाम अमर, तू नीति वही सीखले,
जरा तू सुन ॥ २ ॥
देख शत्रु तेरे पास में है, लगे तुझे भरमाने में ।
करते तुझ पर सदा ही दंगा, भूलता है तू उनके रंग में ।
धोका पायेगा इस संगत में, होशियार होजा अभी,
जरा तू सुन ॥ ३ ॥

कहे जयराम समझले भाई, करले जीवन उद्धार कमाई।
पार होगी तब भंवर से नैया, बिना भजन भलाई नाही।
करते जा अब तू नेक काम, प्रभु होंगे सहाई तभी,
जरा तू सुन ॥ ४ ॥

भजन ६१ (तर्ज– है अपना दिल तो आवारा) 3५६२१

यह तन छोड़कर प्यारा, अकेला प्राण जायेगा।
अमर है नाम उजियारा, अगर प्रभु ध्यान लगायेंगा ॥ टेक ॥

धन दौलत ये सारी, क्या करेगी बिचारी।
है सबसे लाचारी, है सबसे लाचारी ॥
साथ ना दे ये घर द्वारा ॥ १ ॥

ये बहन और भाई, बेटा हो या लुगाई।
ना साथ देगा कोई, ना साथ देगा कोई ॥
यहाँ पर छोड़ ये परिवारा ॥ २ ॥

सत्य की कमाई, कमा ले मेरे भाई।
साथ देगी यही, साथ देगी यही।
इसीसे होगा भवपारा ॥ ३ ॥

प्रभु बिन सारा, ये झुठा है पसारा।
है संतो का इशारा, है संतो का इशारा ॥
चमकता नैन का तारा ॥ ४ ॥

कहता है जयराम, जायेंगे निज धाम।
मिलेंगे घनश्याम, मिलेंगे घनश्याम ॥
वो ही है सबका रखवारा ॥ ५ ॥

३५/२१

भजन ६२ (तर्ज– लेके पहिला पहिला प्यार)

हो जा काम में तैंयार, ना रह गफलत में तू यार।
नहीं तो होगा ये तेरा जीवन ही बेकार ॥ टेक ॥

कर्तव्य को अपने क्यों भूलता है।
बुराई में जीवन को क्यों खोता है।
घरले समय का तू ज्ञान, क्यों बनता है रे नादान ॥ १ ॥

व्यवहार तो देखो, तेरा झुठाई का।
सच्चाई कभी–भी नहीं तूने सीखा।
अब तो सत्यता को पाल, छोड़ दे बुरे मार्ग की चाल ॥ २ ॥

देख रहा तू, सुत नारी सपना।
भूला है क्यों तू, हरिनाम जपना ॥
हो जा अब तो भी होशियार, समय न आवे बारम्बार ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे प्रभु को न भुलना।
चाहे जैसे संकट आये, उनसे न डरना ॥
अपने कर्म को सुधार, होगा जीवन का उद्धार ॥ ४ ॥

भजन ६३ (तर्ज– तोरी बिगडन वा चलनियाँ)

३५/२१

कबहूं सुधरेगी समाजवा, पिछरी सारी।
जाग जारे तु मनुआ लना न देरी ॥ टेक ॥

अज्ञानता में पड़े हुये हैं, कितने ये नर नारी।
धर्म नीति तो छोड़ दिये है, करते हैं व्यभिचारी।
कैसी होगी रे तरनवा, भव ये भारी ॥ १ ॥

जो करना था उसे न देखा, राह बुरी अपनाते ।
झुठे चक्कर में पडकर के, खाते यहां पर गोते ।
कैसे सफल होगी जिवनवा, अग्यान अंधेरी ।। २ ।।

पल पल घडियां निकल रही है, जल अंजली का जैसा ।
क्षण भंगूर है काया इस पर, मत करना तू भरोसा ।
करले करले तू भजनवा, उमर थोरी ।। ३ ।।

काल करे सो आज ही करले, धरले प्रभू का ध्यान ।
गर्भ करार का विचार करले, कहना संतो का मान ।
यह गुजर रही है उमरियां, लगा न देरी ।। ४ ।

अमर किर्ती छोड़ के प्यारे, यहाँ से सभी को जाना ।
ये दुनियाँ दो दिन का मेला, है ये मुसाफिरखाना ।
मत बने रे दिवान वा, माया जहरी ।। ५ ।

प्रपंच साधकर सेवा भाव में, अपने मन को लगालो ।
जयरामदास कहे सुन प्यारे, तिजोरी पुण्य से भरलो ।
बारम्बार मिले ना समयवा, दर्शन मुरारी ।। ६ ।।

भजन ६४ (तर्ज– धीरे रे चलो मोरी)

नाम सुमर तेरी बिती रे उमरियां ।
लिजो रे लिजो प्रभू मोरी खबरियां ।। टेक ।।

सुन्दर काया देख लुभाया, मेला है पल घडी का – हो देखो...
आया वैसा ही सो जावे, पल भर रह ना पावे ।
सब भूल गया ।। नाम सुमर ।। १ ।

अष्ट धातु का पिंजरा तेरा, क्यों रहता गफलत में – हो देखो ...
क्यों करता हैं तू आशा, नही पल का हैं भरोसा ।
अब तक जन्म गया ॥ नाम सुमर ॥ २ ॥

जो सुख पावो राम भजन में, नाम भजो तुम दिल से – हो देखो . .
है दोनों की सुतनारी, आखिर छुट जाये गिरधारी ।
आखिर पा ही गया ॥ नाम सुमर ॥ ३ ॥

कहे जैरामदास सुनले भाई, आखिर सबको जाना – हो देखो . . .
क्यों भूला हैं नादान, आखिह साथ ही देता नाम ।
जीवन व्यर्थ गया ॥ नाम सुमर ॥ ४ ॥

भजन ६५ (तर्ज– जिवन में पिया तेरा साथ रहे)

मन हरी दर्शन को अधीर रहे,
सच प्रेम का नैनो से निर बहे ॥टेक॥

भरपूर भरा रहे प्रेम तेरा, जुदा न रहे मेरे दिल मन से ।
होते रहे दर्शन पल पल में, मैं जाऊं न कहीं तेंरे कदमों से ।
अवगुण प्रभु मेरे हरते रहे, सच प्रेम का नैनो से नीर बहे ॥१॥

हरदम में प्रभु दुःख देते रहो, कभी भुल न हो तेरे भक्ति की ।
मैं तुझमें रहुं तु मुझमें रहें, लीला है अजब तेरी शक्ति की ।
यह काम क्रोध डर जाता रहे, सच प्रेम का नैनों से नीर बहे॥२॥

दिवाना बनाले तु अपना हरदम, ही लगन तेरी लागी रहे ।
तेरे ही गुण मै गाता रहूँ, दुजा न भाव मेरे दिल में रहे ।
द्वेश भाव ये तन से जाता रहे, सच प्रेम का नैनों से नीर बहे॥३॥

निर्भय बनके तेरा नाम जपूं, यह अर्ज है मेरी दयालु हरि ।
यह विनय मेरी सुन कर के, अब दौडके आवो गिरधारी ।
प्रभु लाज रखो जैराम कहे, सच प्रेम का नैनों से नीर बहे ।।४।।

भजन ६६ (तर्ज– ले तो आये हो हमें सपनों के गांव में) ३५५२१

तुम तो घुमते हो निठल्ले, अपने वो गाँव में,
क्रोध के ताव में दरोर डालना,
तजना ओ भावना २ ।।टेक।।

तुम ने उठाना तो भाव, उजले ये मन के ।
तुम जैसा करो फल मिले, ये वैसे ।
तुम ही गुरु तुम्ही पर आधारित, ये कहानी ।
दुजा न कोई दिखे, मन के दर्पन मे २ ।।१।। क्रोध के...

ज्ञान का बड़ा हो अपना, देखे वो एक में ।
प्रेम सभी से सबका वो दुलारा हो ।
इसके सिवा दुजा नही कोई, हित रे भाई, ।
जैराम दास कहे स्वहित भलाई ।।२।। क्रोध के...

भजन ६७ (तर्ज– लेके पहिला २ प्यार) ३७७३०१०१०

दिल मेरा है दिलदार, सभी जीवों से करे वो प्यार
किसी से न करे, वो कभी तकरार २ ।।टेक।।

जड चेतन में उसका बासा, सब जीवों से उनका नाता ।
कभि ना होवे उसकी हार, जाने उसको मिला संसार ।
किसि से ना करे ।।१।।

भिन्न भिन्न नजारे उसके, छबी भरी है, तीनो लोक में ।
पंच तत्व में है, उसका संचार, अनहद से हैं उसका तार
किसि से ना करे ॥२॥
दैविक असुरी दो शक्तियाँ, जैसे होवे मन की वृत्तियाँ ।
लेवे जिसका सहारा, लगे उसको वो प्यारा ॥
किसि से ना करे ॥३॥
जैराम कहे समक्ष का फेरा, जाने बिगर लगे ना थारा ।
नश्वर में ही हैं ईश्वर परखे परखे बिन कंगाल नर
किसी से न करे वो ॥४॥

३५६९१

भजन ६८ (तर्ज– आ लौट के आजा मेरे मित)
जरा सुनले ये इन्सान, धरले ज्ञान, भलाई हैं ।
सब जिवो को जान समान, धरले ध्यान, भलाई हैं ॥टेक॥
न दिनोंको सताना, मानले कहना, एक दीन है सबको जाना ।
नहीं देर करना न गफलत मे रहना, आखिर है, मिट्टी में मिलना ।
संत कहते इसे सत् जान, होगा कल्याण, भलाई है ॥१॥
जीवन सहारा, गौ वंश प्यारा, इसने है तन को घिसाया ।
प्राण प्यारा, उपकार सारा, संकट से हमको बचाया ।
ना भुल अरे नादान, सुधर अनजान भलाई है ॥२॥
कर गौं की सेवा, भूल न जाना, दास जैराम कहता है ।
मिलेगी दुआ, मोक्ष पद पाना, आवागमन मिटाता हैं ।
कर दया धरम और दान, रख ईमान, भलाई हैं ॥३॥

भजन ५९ (तर्ज– जब जब तु मेरे सामने आये)
प्रभू तेरो खेल है, अचरज भारी ।
क्या जाने हम संसारी ।टेक॥

एक बुंद नें विश्व बनाया, पंच तत्व काय गिरी ।
तिन गूण धरे हैं, सब में, और माया नाम धारी ।
क्या जाने हम संसारी ॥१॥

पृथ्वी आप तेज वायू, आकाश ब्रह्म चैतन्य निराकारी ।
हाड़ मास रुधीर भरा हैं, किया चमड़े की पुतली ।
क्या जाने हम संसारी ॥२॥

श्वाँस-श्वांस का खंबा बनाया, झुला देव एक नारी ।
जैरामदास कहे निर्गुण सगुण,
अगम–निगम प्रभू व्यापारी ।
क्या जाने हम संसारी ॥३॥

भजन ७० (तर्ज– एक डालपर तोता बोले) ३५९ २।

कलयुग में तु करता बढ़ाई, सतयुग में आयेगा रोना ।
सत्यवान ये कुचला जावे, बडे मुश्किल हैं जिना ॥टेक॥
बोलो जिना, जिना जीना ॥

पाप कपट कीं जाल बिछाकर, पंडित वही कहलाये ।
भक्ति भाव को दिया छोडकर, लोफर शाही फैलाये ।
मांस मदिरा खाये, दुनियां में ज्ञान बताये,
छिनकर गरिबोंकी दौलत, अलमस्त बना है, दिवाना ॥१॥

तिलक लगावे, माथेपर अपने, सरपे जटाये बढ़ा ये ।
भगवे कपडे रंगाकर पहने, हाथ में चिमटा वो धराये ।
दारु बाटल पीकर, गांजा चिलम चढाकर ।
लाज शरम को छोड़ दियां, पाप सरपे है रखना ॥२॥

बडे मतलब के हैं ढोंगी साधु, कथा रामायण से बतलाये ।
खुद के अंदर ज्ञान नही तो, दुनियां में ज्ञानी क्या कहलाये ।
जैरामदास कहे सुनो भाई, करलो पुण्य की कमाई,
गालो गालो प्रभुका, गाना ॥३॥

34/21-

भजन ७१ (तर्ज– मैं तुलसी तेरे आंगन की)

ये दुनियां है रे मतलब की,
लाये वही, लाये वही, लायें वही, प्रितें स्वार्थ की ॥टेक॥
मचले जिया ये रोये नैना,
मिले वही पर इसको ठिकाना,
झाकी भरी है माया की ॥१॥
मोह ममता का हृदय भरा है,
विष वहां पर घुठा पड़ा हैं,
प्रभू ये कहानी जीवन की ॥२॥
दुख ही दुख संसार में भरा,
खिसक रहा है धैर्य सारा,
कल्प-विकल्प ये मनकी ॥३॥
जैराम कहे सत संगत बिना,
पल पल में है रोना ही रोना,
प्यास न बुझे ये मनकी ॥४॥

३५४/२१-

भजन ७२ (तर्ज– मिलती है जिंदगी मे मोहब्बत कभी २)

उपरी आदमी की है, भाषा उपरी,
किसको न शांती मिली, मन में आदत बुरी ॥टेक॥

काला है यह मनका, मिठा है जुबा का, ।
विचार का वो गंदा, दुनियाँ पर डाले फंदा ।
करे वादे वो अधूरे, रखे दिल में गद्दारी ॥१॥
दया का न ठिकाना, स्वारथ का गाये गाना ।
हित को कभी जाना, शैतान जैसे घुमना, ।
साधा इस लोक को, पर लोक का भिकारी ॥२॥
पर निन्दा में बिताये, उमरियाँ अपनी सारी, ।
दुखियो का दुख न जाना, ऐसा है व्यभिचारी ।
कहे जैंराम ऐसे नर को, आगे है यमपूरी ॥३॥
उपरी आदमी की है, भाषा उपरी ॥

भजन ७३ (तर्ज– अगर है ज्ञान को पाना)

अगर भलाई चाहता हैं, तो आत्म चिंतन करते जा ।
सत्य का मार्ग धर करके, सभीं से प्रीति करते जा ॥टेक॥
सभी आत्माये मेरी हैं, जगत में ना कोई दुजा,
विश्व में हु मेरा मैं ही, ब्रम्हरस नित्य पिते जा ॥१॥
एक से अनेंक हुये पैदा, निभाले उसका वादा,
मानवताका ध्यान रखकरके, लेते जा उसमें मजा ॥२॥
तेरा तु ही है रे दोषी, तेरा तुही अनदोषी,
हित अनहीत समझ करके, पाप को करते जा वजा ॥३॥
कहे जैंराम तेरा तूही, और दुजा नही कोई,
तू ही ब्रह्म है एक, भावना ऐसी करते जा ॥४॥

भजन ७४ (तर्ज– महिमा अपरंपार की)

मिटे न मन की प्यास बाबा,
नीत नुतन से आस बढ़त है, डाले मोह का फाँस बाबा ॥टेक॥

आशा-तृष्णा रंग दिखावे, क्रोध करे शैतानी,
काम लोभ ये नित्य सताये, जिवन रहे उदास ॥१॥
बढें तृष्णा धन दौलत की, चिंता रहे दिन रात,
बिना अग्नी से तन ये जलता, अग्नी लगत जरा पास ॥२॥
बन २ घुमें मृग के जैसा, सुंघे गंदी घास,
कहिं न मिले उसको ठिकाना, अंत में होवे निराश ॥३॥
जैरामदास कहे सत संगत बिना, समाधान ना मिले,
कोशीस लाखो कोई करे, पर रहे अधुरी प्यास ॥४॥

३५६ २१

भजन ७५ (तर्ज- अवतारचे कार्य कराया)

जिस आदमी का विश्वास नही, उसकी संगत करो न कभीं।
जब तक उसकी शाश्वती न आये,
भुलकर साथ पकडो न कभी, ॥ टेक ॥
अपनें मन मे शंका कुशंका आये किसी व्यक्ति की,
परख न करे उसकी जबतक, भ्रांती मीटें अपने मन की
बोल पे से तत्व पहिचानो, मील जायें न उसकी खुबी ॥१॥
कई स्वारथ हित करते प्रीति, बाते चलातें मीठी २
भरी पेट में कुटनीति, गंदी है, उसकी मती,
करता प्रेम मतलब का वो, वक्त गरज का वो लोभी ॥२॥
जीवन को शांती मिले, वहा जिगर खोलके बोलो
वही प्रीति अपनी जुड़े, कहीं न आये अडथडे,
जैरामदास कहे कहना मानो, बात न कभी ये भुलनें की ॥३॥

भजन ७६ (तर्ज- सुलताना २ मेरा नाम है सुलताना) 3५५\२१

हसाँना ऽऽऽ सिखो २ सबको हसाँना २, प्रेम देना और प्रेम लेना २
तू ज्ञान ज्योती है, हो २ तु सत्य नीति है हो २
मानवता का नाता निभाना ।।टेक।। हसाँना..

तु सत्य का राही, तुझसा नही कोई,
अज्ञानी को तू, राह दिखाये सही
तु दिलदार का सागर, हो २ दीनो का उजागर हो २
तेरा काम है सबको शांती देना ।।१।। हसांना

तु देखे भलाई, मिटाये बुराई,
समता का भाई, जगे किस्मत सोई
तु आत्म देन है हो २ तू पर ब्रम्ह है हो २
माया से सीखा है मरना जीना ।।२।। हसांना

तु जौहरी का हीरा, तू कचरे मे गीरा,
तु आपको न परखे, तब तक है अधुरा
तु गुरुबीन है हो२ तु युक्ति हीन है हो २
जैंराम भक्ति बिन, मोक्ष ना ठिकाना ।।३।। हसांना..

भजन ७७ (तर्ज- कशाला काशी जातो रे बाबा)

कमाले राम रतन धन पैसा रे बाबा
कहिना पडे तुझे तोटा ।।टेक।।

यही तेरे साथ जायेगा, सद्गती तुझे मिले २
कही न पड़े तुझे रोडे, प्रितम से प्रित जोडे,
फर्ज अपना निभाते जाना, कोई ना लगावे बट्टा ।।१।।

कहता जैराम ऐसे नर भगवान का रखे न डर ।
जीवन इनका रहे जरजर शांती ना मिले कही पर ।
इहलोक ना परलोक मे मिले थारा ।। ४ ।।

34{21

भजन ८१ (तर्ज- मनि नाही भाव म्हणे देवां मला पाव)

अलाल गुंडे मालोमाल, परिश्रम कें बूरे हाल ।
अनिती की बढ़ रही चालरे, सज्जनो की निकलरही खाल।टेक।

बात न करतें भाई चारा की
भावना दिल मे कुर नीति की
झुटा बजाते गाल रे ।। १ ।।

दया धरम ना दिल मे भरी है
क्रोध की ज्वाला भडक रही है
मर्यादा ये निकल रही है
जिसका माल उसीका बेहाल रे ।। २ ।।

श्रद्धा करुना हो रही लाचार
सत्यवादो की कोई सुने ना पुकार
विचारवंत हो रहे जर जर
मानवता हो गयी निर्बल रे ।। ३ ।।

जैरामदास कहे देखा ना जाये
दिल हरदम तडपता रहे
नैनो की धारा रूखने ना पाये
देखकर अत्याचार रे ।। ४ ।।

---०---

मराठी–विभाग

भजन १ (चाल–साई बाबा बोलो)

मोकळ्या मनाचा, जिव्हाळा जिवाचा²
तोच आवडता, सर्व जनाचा
प्रेम भावाची, त्याला ओढ²
भुकेला न मान पनाचा ॥ ध्रु. ॥

सर्व भूती असे, त्यांचे एक चित्त ।
सत भावनेचा, धरुनियाँ व्रत ।
पर दु:खाला ऽऽऽ² अपूले मानीत
कुणासी न द्वेष वैर भाव²
दास असे तो भी हरिचा ॥ १ ॥ मोकळ्या मना.

स्वहिताची त्याला प्रीति,
देश समाजाची आवड मोठी ।
धाव घेई ऽऽऽऽ² दुबळ्यासाठी
पोटी कळवळा ओढी प्रेम लडा²
सोयरा हा दिनाचा ॥ २ ॥ मोकळ्या मना.

अंगी सदगुणाचा, वाहतो झरा ।
हृहयात्त आहे दयेचा पाझरा,
सिद्धांत तत्वाचा²ऽऽऽऽ असे तो खरा ।
हरिनामा ची त्या, वेड²
मित्र असे तो भावीळाचा ॥ ३ ॥ मोकळ्या मना.

जैराम म्हणे, ठायी निवला ।
वर्णु काय मी, त्या महिमेला 2
जन्मा येवुनीऽऽऽऽ कुळ उद्धारिला, प्राप्त केले अमर पदा
दाता तो त्रिलोकांचा ॥ ४ ॥ मोकळ्या मना.

गुरुवार भजन २ (चाल– बेर भई प्रभु क्यों नही आवे)

मन लागली आहे चिंता, तुझ्या भेटीची भगवंता रे ॥ धृ. ॥
तु जग व्यापक पालनकर्ता, दे दर्शन मज तुचि समर्था ।
तुच वाचुनी मज नाही स्थिरता रे ॥ १ ॥
माये मध्ये भुललो अनंता, चुकलो तुझ्या गावाचा रस्ता
मज पडली आहे भ्रमता रे ॥ २ ॥
चहुदिशी बघतो नेत्र उघडुनी, तरी तु न दिवसी चक्रपाणि
प्रभु धावत येई तु आता रे ॥ ३ ॥
कुठे बसला तु त्रिभुवनी, ऐक तु दिनाची गाऱ्हानी
घे हाक माझी जगत्राता रे ॥ ४ ॥
तुझे सहस्र नेत्र असुनी, मज बघसील ह्या नेत्रांनी
हि विनवनी माझी आता रे ॥ ५ ॥
वेद कथुनी तुला पाहती, कथा किर्तने कित्ती रिझवती
मला कळत नाही तुझा अंता रे ॥ ६ ॥
जैरामदास म्हणे हे देवा, न कळे तुझ्या भेदाला ठावा
कधी देशील भेट भगवंता रे ॥ ७ ॥

३५६२४

भजन ३ (चाल- रेशमी सलवार)

मानवा कैसी तुमची रित कथा, लहान पणी मुलांचे लग्न कां करिता ॥ धृ. ॥

कर्ज काढुनिया, अंती शेतीस विकता ।
अन्न वस्त्राने व्याकुल होऊनी, दरो दरी भटकता ।
अन्नाने उपवसी राहिता ॥ १ ॥

त्यांना शिक्षण न देता, अज्ञान तेने करितां नास ।
स्वार्थ हितासाठी, तुम्ही ठेवता नौकरीत ।
जिवन का गमवितां ॥ २ ॥

ते तारुण्यपणी रडती, रोगाने बेजार होती ।
कैसी केल्या बापा गती, लग्न वेळी कुठे होती मती ।
हे झाले तुमचे मत्ता ॥ ३ ॥

सोडा ऐसी वाईट चाल, नाही झालं कोणाचं भलं ।
द्यावे शिक्षण मुला मुलीस, तेव्हा लागती सत मार्गास ।
सावध हो आता ॥ ४ ॥

सोडा अज्ञानतेची वाट, सतमार्ग धरी तु निट ।
जैरामची विनवनी, तुम्ही द्यावे सर्व कानी ।
मानवा करिता ॥ ५ ॥

भजन ४ (-चाल रेशमी सलवार कुरता जालीका)

३५६२१

सुंधु संताचा भेष घेऊनी उपदेश देई जगाला ।
नाज़ तमाशे गांजा दारू यांनी असे बाटला ॥ धृ. ॥

हाटेल मध्ये जाऊन त्यास चहाचा आर्डर देतो ।
खारा, चिवडा, बिस्केट आधी तो भक्षण करतो ।
हातामध्ये कप घेताच, म्हणे चहा फिका झाला ॥ १ ॥

घरी स्त्रि मुलबाळ तंग, भोगती अन्नासाठी ।
त्याची त्यास दया नाही, त्याने बुडविले घरासी ।
खोटे व्यशन मध्ये फसुनि कंगाल झाला ॥ २ ॥

पैसा नाही अन्नासाठी, स्त्रि फिरते दारोदारी ।
केवीलवाणी मुद्रेने म्हणे, भुकी आहेत मुल पोरी ।
पैसा न कुणी दिल्याने, उपवासी राहिला ॥ ३ ॥

प्रपंच ध्यान न देता, आळसात बसुन राहि ।
खोटया नाटया गोष्टी सांगुनी, मोठयांना फसवित जाई ।
पाप पुण्याचा विचार मनी नाही केला ॥ ४ ॥

जैरामदास म्हणे रे बाबा, सोडा वाईट संगतीसी ।
कुमार्गासी त्यागुन, तु हाती घेऊन सत्यासी ।
हातत काम घेऊनी, जानवी मानव धर्माला ॥ ५ ॥

भजन ५ (चाल– भिमरायाने सोडीयले गांव)

किती दुर तुझे ते गांव, मला नाही ते कांहि ठाव रे ॥धृ.॥
षड्रिपुने मला अडविलें, तुझ्या गावची वाट ।
भुललो आहो तुझे ते नांव रे ॥ १ ॥
गर्भवासी करार केला, या संकटी तु काठ ।
मग करीन, तुझी ती धाव रे ॥ २ ॥

तुझ्या गावाची थाट धरली, तरण्या भवडोव ।
मार्गी पडला, आहे भेदभाव रे ।। ३ ।।

हे जन सारे मागे ओढीती, निज स्वार्थाची गोडी लावती ।
दावि मौजेचा मजला प्रभाव रे ।। ४ ।।

जैराम म्हणे कुठे तु बसला, कुठे तुझे ते गांव ।
तुझे गांव मलातरी दाव रे ।। ५ ।।

भजन ६ (चाल– घटा घन घोर......)

कंठ भरुनिया येती, गरिबाची पाहुन गती,
मन हे आवरेना कधी भेट देशील मनमोहना ।। धृ. ।।

दुःखी जिव्हाला पाहुनिया, नयनी येतो पाणी ।
कित्ती लोक उपासी मरती, मिळे न मुठभर दाणी ।
धीर कुणी देईना, रक्षा कुनी करिना,
तुझविन घनशामा ।। १ ।।

रातंदिवस कष्ट करुनी, मिळेना अन्न वस्त्र,
पैसा नाही शिक्षण देण्या, कैसी होती साक्षर ।
याची दैना पाहुनी, यन येतो कळवळुनी ।
करितो देवा प्रार्थना ।। २ ।।

या काळी कित्येक म्हणती, लोफराना हुशार ।
धर्म नीतिच्या व्यक्तीसी, म्हणती आहे भोंदु चोर ।
आता आली ऐसी वेळ, लोक चालती वाईट चाल ।
काहि मज सुचेना ।। ३ ।।

जगात गांजा मांस मदिरा, याचा व्यापार वाढला ।
दहि दुग्ध ताक-लोणी, कितीकांनी पिणे सोडला ।
वाहवारे कैसी रित, दुर्व्यंनासी लावती प्रित ।
आता बदलला जमाना ।। ४ ।।

त्यांची कमाई तोच आज, बनला आहे चोर ।
लपक्षप खोटे सांगणारा, बनतो आज सावकार ।
दुष्ट नास करावया, भक्त उद्धारावया ।
येई बा राधा रमना ।। ५ ।।

भेदासुर साऱ्या जगांत, येऊनिया ठेपला ।
म्हणोनिया रोगराई, यांचा वाढ झाला ।
काहि न केल्या सम्हले बिमारी, आता आली चळवळ भारी ।
धाव म्हणती कृष्णा ।। ६ ।।

दास जैराम म्हणें देवा, अर्ज तुझपासी,
वाचवा आता भवडोही, बुडत्या मानवासी ।
वेळ आता नको लावु, अन्त आम्हाचा नको पाहूं ।
येऊन दे सांत्वना ।। ७ ।।

भजन ७ (चाल–दाने दाने पे लीखा है)

जन तरण्यासी होत असे, संताचे अवतार ।
लोंका सांगताती करा, तुम्ही सत्याचा व्यवहार ।। धृ. ।।

प्रपंची भुलल्या लोंकास, मार्गासी लावुनी ।
त्यांचे अवगुण विकार सर्व हि हरोनी ।
तत्काळ करुन देती, मानव जन्माचा उद्धार ।। १ ।।

सांगताती लोकास दुर्व्यसनासी सोडा ।
प्रेम भावे चाला अहंकारासी मोडा ।
तेव्हा व्हाल तुम्ही भव सागरातुनी पार ॥ २ ॥

आलीया जन्माचे सार्थक तुम्ही करा ।
तेव्हा मिळे तुम्हा मोक्षचिये द्वारा ।
अमोलीक वेळ न मिळे, खोऊ नका बेकार ॥ ३ ॥

जैरामदास सांगे संत समदृष्टी पाहती ।
अज्ञानी लोंकाची ते काढताती भ्रांती ।
देह झिजवुनी करती, सर्वावर उपकार ॥ ४ ॥

भजन ८ (चाल– कुठवरी भोगसील मोजारे)

३५६२१

गड्या मागे पुढे पाहुन चालगा ।
समोर टपुन उभा आहे काळ गा ॥धृ.॥

चहु दिशाना वेढा घालुन, चोर आहे टपले ।
मोहमायेच्या फांशात कां कसे गुंतले ।
अज्ञानासी आता जाळगा ॥१॥

किती दिवस खोवुन बसला, आता तरी जाग गा ।
मानव कर्तव्यासी भुलला, आता तरी तु लाग गा ।
भवडोही कसा होसी पार गा ॥२॥

सर्पा तोंडी बेंडुक असुन, ओरडुन म्हणे मी शहाणे ।
तसे तुझे रे मानवा आहे जन्म गम्हाने ।
पाप पुण्याचे तुज मिळेल फळ गा ॥३॥

पूर्व पुण्याने नरदेह मिळाला, आयुष्य खोऊन बसला ।
नीति धर्माने चाल गड्यारे, नाही तर धर्म बुडाला ।
आता उरली आहे थोडी वेळ गा ॥४॥

जैरामाची प्रार्थना आहे, सर्व आई बापांना ।
प्रपंच साधून परमार्थ करावा, हाच धर्म मानावा ।
हेच खरे नियम पाळगा ॥५॥

भजन ९ (चाल– दिल मन से गाऊंगा सेरा भचन)

मानवा इतके दिवस कां झोपला,
उठ आता लाग तु परमार्थ कामाला ॥धृ.॥

ज्याची कमाई, ते उपवासी राही ।
लबाड लोक त्यांच्यावरी, घालती जालशाही ।
या बेकारीने गड्या पाप वाढला ॥१॥

एक करी तन मनाने, मेहनतीचे काम ।
त्याचे कमाई वरी, दहा करती आराम ।
पुरत नाही अन्न, उपवासी राहीला ॥२॥

धर्म नीति सोडून राहती लोभ अहंकारांत ।
कमाई पेक्षा खर्च वाढला, पैसा नाही घरांत ।
शोक करती रात्रंदिवस, रोग वाढला ॥३॥

जैराम म्हणे दवडूं नको, या सुवर्ण संधिला ।
तेणे होईल आपल्या, भारत भूचा भला ।
ओळखुनि चला आता, मानव धर्माला ॥४॥

भजन १० (चाल- ध्यान लगा वैराग्य जगा) पुणमार

माझे अवगुण ने, मला सतयुग दे, पांडूरंगा।
तुज वाचून मज नाही संग गा ॥धृ.॥
षड रिपू हे अडवूनी बसती, दावती विषयाची प्रिती।
तुझ्या नामांची विसर पाडूनी, हे दाविती कूमती।
तू धावत यावे, रक्षा करावे, कर फाशांतून पार गां ॥१॥
पाप वाटेने हे नेवोनी, लावती विषय मोहनी।
अहंकारांत बुडवीनिया, नेती वाईट चालीनी।
तुं वाचवीं आता चरणी माया, तूं जगाचा वाली गा ॥२॥
जैरामदास म्हणे प्रभु देवा, भक्तांचा तु कैवारी।
मोह मायेच्या फाशातुनी, काढ मज तु हरि।
ऐक विनवणी यावे चक्रपाणी, ठेव माझी कांही लाज गा ॥३॥

भजन ११ (चाल- प्रभु हा खेळ दुनियेचा) पुणमार

प्रभु माझ्या या नावेला कधि तू पार करणार।
अडली आहे ही भवडोही, कशी होईल ही पार ॥धृ॥
नदी आहे मोठी खोल, नाव होते डावाडोल।
मद मत्सर अडविती, लहरांचा मोठा जोर ॥१॥
याचे पाई हि क्षिण झाली, मध्य धारी आहे अडली।
करावे काय ? सुचेना, क्षणोक्षणी हाचि विचार ॥२॥
पदोपदी आहे धोका, काळा पासोनिया रंका।
असा तू मार्ग दावावे, जेणे ही होई भवपार ॥३॥
भक्त प्रल्हाद धृवाला, मार्ग तुने जे दाविले।
दिले त्यांना तू दर्शन, तूच सर्वांचा कर्तार ॥४॥
वरदान ऐसा दे देवा, तुझा विसर न व्हावा।
दास जैराम म्हणे आता धावोनी रक्षा तू कर ॥५॥

विठ्ठल

भजन १२ (चाल– भिम रायाने सोडियेले गांव)

किती गोड तुझे हे शब्द, संता ऐकून मन झाला लुब्ध रे ॥धृ.॥
तुझे ते ज्ञान ऐकूनी, पडली मनावर मोहनी ।
लागला तुझा मला छंद ॥१॥
वाईट संगती पाई संत, संगत केली नाही ।
कळला नाही मला कांही बोध ॥२॥
कथा पुराण नाही ऐकले, भ्रम मनाचे नाही गेले ।
अज्ञाना पायी झालो मी अन्ध ॥३॥
जैरामदास म्हणे मज गुरु देवा, द्या आपल्या चरणी ठावा ।
तोडा अज्ञानाचा हा बंध ॥४॥

विठ्ठल

भजन १३ (चाल– लपवूनी ठेवसी काय राधीके)

कोण तोडील भवपाश गुरुराया
तुजविण मन हे उदास ॥धृ.॥
लोभ माया हे, ओढूनी नेती, कुमार्गाची वाट दाविती ।
करिती आयुष्याचा नाश ॥१॥
भाग्याने नर जन्म लाभला, प्रभुशी गर्भी करार केला ।
विसरलो त्या नेमास ॥२॥
किती दिवस मागे खोवूनि बसलो. मानव कर्तव्याशी नाही जागलो।
म्हणूनी अडकलो पाशांत ॥३॥
अवगुण माझे सर्व काढूनी, मज अज्ञानाशी ज्ञान देवूनी ।
सफल करा जन्मास ॥४॥
जैरामदास म्हणे गुरुदेवा, तुझ्या चरणाची घडो मज सेवा ।
हीच लागली आंस ॥५॥

३५६/२१

भजन १४ (चाल– दिसतो हरि हा भोळा)

मानवा कर्तव्याशी भुलला, रोगाने बेजार केला ॥ध्रु.॥

सोडली पूर्वजांची चाल, करशी मातापित्याचे हाल ।
शाप त्यांचा तुज लागला ॥१॥

नीति भक्तिचा सोडुनि नाद, वाईट मार्गात मानतो आनंद ।
यांत आयुष्य खोवूनि बसला ॥२॥

तू काम न करशी काहीं, थाटाने बसुन राही ।
याने वाढविले खर्चाला ॥३॥

होती स्टेट ती तू खोविली, संगत लबाडीची तू घेतली ।
लुटतोशी तूं गरिबाला ॥४॥

त्या आत्म्याचा शाप तुज लागला, जैराम म्हणे गर्वानि वागला ।
सोडूनी प्रभु नामाला ॥५॥

भजन १५ पोवाडा (चाल– माणसा सरळ हो असा)

३५५/२१

माणसा सोड हिंसेला, कपट द्वेषाला ।
छळू नको कोण्या जिवाला ।
यांत नाही निघे तुझा भला ।
कशी नये बुद्धि रे तुजला ।
दूजा नको बधू कोण्या जोवाला रे जी जी ॥१॥

कित्येक लोक डोलाने डूलती, भजने करिती ।
भजनाचा अर्थ ना कळती ।
वाटेल तसा दुराचार करती ।
कशी झाली रे याची मती ।
दारु मासांत रमले असती रे जी जी ॥२॥

जेव्हा ओढी गांजाची पुडी, यशा मग चढी । व्यर्थ बडबडी ।
तेव्हा भजनाची यांना गोडी
कशी चाल लागली यांना वेडी ।
असे लिहले का कोण्या शास्त्री रे जी जी ॥३॥

कित्येक गोड गोड बोलून, लोकांस फसवून ।
धन द्रव्य त्यांचे लुटती ।
अन्न वस्त्राची फजिती करितीं ।
स्वतः सावकार बनती ।
अशा कशा यांच्या खोटया रिती रे, जी, जी ॥४॥

विनवितो मी बांधवाना, खोटयास त्यागाना ॥
सत्य कर्मास लागाना ।
तूम्हा मग नाही कुठे उणा ।
कानी घ्या जैरामाची प्रार्थना ।
नाही तर चौऱ्याशी बंधना रे जी जी ॥५॥

विदर्भात

भजन १६ (चाल– सारी सारी रात तेरी याद)

केव्हां भेट देशी तू भगवाना ।
आम्हा भारताच्या, दीन लेकरांना हो ॥धृ॥

जन तारण्याशी भारतात यांना, दर्शन द्यावे आम्हा पामरांना
तुझ्या भेटीविणा, दुखी मी मोहना हो ॥

आतां तरी करावे भारतांस सुखी,
लोक किती राहती अन्नाविण उपाशी ।
दीन दुबळयांना, तुम्ही वाचवाना हो ॥२॥

किती तरी लुटती दीन लोकांस,
कष्ट देवूनिया देती त्यांना त्रास ।
यांचा अभिमान तुम्ही मिटवाना हो ॥३॥

कित्येकांना असती दुर्व्यसने फार,
प्रभु याचे विकार सर्व करा दूर ।
दास जैरामाची हाक तरी घ्याना हो ॥४॥

भजन १७ (तर्ज– चोदहवी का चांद हो)

वाढो सर्व जीवा प्रति, बंधुत्व भावना ।
दु:खी राहो ना कुणी, सुखी दिसु दे नयना ॥धृ॥

अन्न मिळो सर्व जीवा, कुणा कमी ना पडो ।
संसार हा सर्वांचा, परमार्थी जडो ।
घेउनी काम हाती, करी देव प्रार्थना ॥१॥

संगठना एकतेची, करन्यासी उन्नती ।
सू–मार्गी जडो, सर्वांची ही मती ।
निघू दे सर्व ही, जातीभेद भावना ॥२॥

व्यवहार हा घडू दे, सत्य भावनेचा ।
मिटू दे अज्ञान सारा, मी तूं पणाचा
सर्व हृदयी राहूं दे, दया सु-भावना ॥३॥

देवा तू एक ही, दीनाची विनवणी ।
लाज ठेवी तू आता, धाउनी चक्रपाणी ।
जैरामास आस तुझी, वाजविण्या ये विणा ॥४॥

भजन १८ (चाल—अगर है ग्यान को पाता)

जीवन हा पलघटकेचा,
कसा तू भुलला वेडया ।
सोडूनी आपुले स्वहित,
भ्रमणी पडलासी गडया ॥ ध्रु ॥

दिवस कोण कैसा येईल रे,
काळोबा घालतील घेरे ।
विसरू नको माये पाईरे, भोगशील चौऱ्यांशी फेरे ॥१॥

माझे माझे म्हणूनियाँ ।
व्यर्थची वेळ दवडून ।
कोण तो राहील तरुण, कुणाचे राहिले धन ॥२॥

आल्यासी स्वहित साधण्या,
पाही तू देव स्वरूप ।
मिळेना गेली ती वेळ, क्षणोक्षणी जपून घे प्रभूला ॥३॥

म्हणे जैराम उठ आता, वेळ ऐसी न मिळणार ।
जोड नाते प्रभू चरणी, तोची एक साथ देणार ॥४॥

भजन १९ (चाल— तेरी प्यारी २ सुरतको)

सत्य मार्ग आपुला सोडू नको,
तू नासवू नको रे जीवा, अरे मानवा ।
ह्या सुंदरगा नरदेहाला, हरी भजनी तरी रंगवा,
अरे मानवा ॥ ध्रु ॥

सगळे जन्मलो या जगती, सुख दु:ख हे जीवन साथी ।
प्रयत्न कितीही केले तरी पण, काही केल्या ना चुकती ।
बहुमुल्य अश्या ह्या वेळेला, जन्मासी तरी गोडवा ।।१।।

शुद्ध भाव तु ठेवी मनी, ईश्वर सेवा करी जनी ।
वेडा होउनी भटकू नको, तू उगाच आता वनोवनी ।
विचार करी रे, अपुल्या मनी, शुभ कार्य सफल व्हावया ।।२।।

चंदनाचे ते वृक्ष पाहा, उपकारांनी अर्पी काया ।
तसेच कर तू सगळे कार्य, सुंदरता येण्या ।
जैरामदास म्हणे जा गुरु शरणी, तेव्हा होईल सुख जीवा ।।३।।

भजन २० (चाल– ज्योत से ज्योत जगाते चलो)

३५६ २१

कठिन वेळी साहाय्यक ना कुणी,
सौख्यात काढती मिळवणी ।। ध्रू. ।।

अपुले साधण्या प्रिती दाविती,
दूर संकटी पळती ।
ऐसे असती सगे संबंधी,
कधी ना ते आठवी ।
जवळ पैसा म्हणती बसा क्षणी ।।१।। सौख्यात. .

आई बा पाहूनी करी प्रेम,
स्वार्थी यांचा वर्म ।
क्षणी रडती हासती क्षणाला,
पैसा हा विधी कर्म ।
रुपया पायी विसरले धनी ।।२।। सौख्यात,

सत्याला हे सगळे विसरली,
असत्याची प्रिती ।
जैरामदास म्हणे सत्यप्रेमी,
जगी या मिळतील किती ।
खरे सेवक फिरतील वनी ॥३॥ सौख्यात...

भजन २१ (चाल– नंदलाल गोपाल दया करके)

दुष्ट जना करी जरी दया परंतु,
त्याचो न करतो फेड कदा ॥धृ॥

सर्पाला पाजिले दुध जरी,
तरी पण त्याचे विष विरले ।
पाळीलास जरी कावळा घरीं,
तो बोली न पोपट बोली कदा ॥१॥

दुर्जन सज्जन संगती राहे,
परी सज्जन ना होणार कधी ।
माकडा दिले जरी आम्र खावया,
गोडी न त्याची त्यास कदा ॥२॥

डोहाळे गर्भवतिचे हो,
ती वांझ नारी जाणील कशी ।
पूजेत पुरुष बसला दुकासी,
ना दास प्रभूचा होय कदा ॥३॥

द्रव्यात असे हो मन ज्याचे,
पापाचा करी तो शिरपगडा ।
जैरामाची पदवी जन्मभर ना,
मिळेल दृष्टा अन्य कदा ॥४॥

भजन २२ (चाल- हाये रे वो दिन क्यों न आये

गड्या मी झालो, हरि नामी वेडा,
तोची माझा सावळा आवडीचा ॥धृ॥

त्या बिन सुख नाही माझे मना ।
जागृत स्वपनी, माझे नयना, ।
जिवलग असे तोची जिवाचा ॥१॥

करमेना मज अहर्निश हरिवीन।
लागले वेड प्रपंची न ध्यान
सर्वस्वी सोडूनी झालो त्यांचा ॥२॥

चहुंदिशी बघतो उभा पांडूरंग ।
नित्य देई मज संग ।
मिळाले मला सागर दयेचा ॥३॥

जैरामदास म्हणे ज्याचे सुख त्याला ।
न कळे इतरांना त्याची कला ।
मिळे फळ त्यासी संगतिचा ॥४॥

भजन २३ (चाल- पंढरीचा पांडुरंग बिगी[2] धावरे)

अन्याय अत्याचार, बघवेना डोळा ।
नाहीतर मृत्यु देई देवा तू मला ॥ धृ. ॥

वाढला आहे जगी, छळकपट फार ।
खऱ्यांचा कुठे नाही लागत थार ।
इमानदारी लय होते, येई रक्षण्याला ॥ १ ॥

पुत्र पित्यांचा करी अपमान ।
मित्र मित्रांचा, घेतसे प्राण ।
आली कैसी वेळ स्त्रि मानी ना पुरुषाला ॥ २ ॥

दया-भाव-हृदयी नाही, अहंकार ।
परक्याला फसवुनी बनतो होशियार ।
कैसा हा रचला खेळ, कळेना मला ॥ ३ ॥

दानवता जगीफार आहे पसरली ।
मानवता मानवानी सारी सोडली ।
मार्ग प्रेम भावाचा बुडत चालला ॥ ४ ॥

सोडले वर्म कर्म वर्ण चारी ।
जैराम म्हणे देवा यावे लवकरी ।
वाचवा आता तुम्ही बुडत्या जनाला ॥ ५ ॥

३५६ श्री

भजन २४ (चाल– ऐरी मैं तो प्रेम दिवानी)

अस्सल कोण आणि नक्कल कोण, शोधून पाही तू मन ॥ ध्रु. ॥
तेव्हा कळेल त्यांचे मर्म – तुझा तुच पाहून घेई ।
जोवरी असते हे जगत – तोवरी दिसते खोटे जन ॥ १ ॥
वाईट कामें करीसीं तुरे, फळ सत्याचे कैसे मिळेरे ।
भरले दुर्गुण अंगी विकार, कसे ओळखी सज्जन ॥ २ ॥
शत्रु नाही जगी या तुझा, नाही मित्रही या जगी तुझा ।
तुझे कर्म शत्रु बनलेरे, जीवा पाडिले दु:ख बंधन ॥ ३ ॥

दुर्गुण दुसऱ्याचे पाहण्या चतूर, आपला कधीना केला विचार ।
जैराम म्हणे तुझारे तुच पाही, वाइट न दिसे कोणी ।। ४ ।।

भजन २५ (तर्ज– मैं मद्रासी छोकरा)

गाधी युगाचे राष्ट्रीयसंत, निघून गेले माणिक बाबा ।
मानवतेचे होते पुजारी, अस्पृष्यता मिटविण्या आला ।। घृ. ।।

गावोगावी प्रचार करुनी, बांधवतेचा दिवा उजडला ।
परोपकार करीता करीता, झीजविली ही स्वर्ण काया ।
किती तरी हे सोशीले ना केली, जीवाची पर्वा ।। १ ।। मा.

दीन गरीबा मुला करीता, काढीलो शिक्षण संस्था ।
अनाथालया कितीक ठीकाणी, प्राणी सुखी व्हावया ।
देश रक्षण्या व्यायाम शाळा, त्यांनी काढीली संस्था ।। २ ।। मा.

सेवा मंडळ गांवोगावी, प्रार्थना घरोघरी ।
रामाचे ते धनुष्य बाण, क्रिष्णाची ती बासुरी ।
गांधीजींचा चरखा टकळी, तुकडोजीची खंजरी ।। ३ ।। मा.

जैराम म्हणे थोर पुरुष हे, निघूनी चालीले देशातुनी ।
चिंता पडली भक्तांना, या जन्म घेवूनी लवकरी ।
देश रक्षण्या, धर्म रक्षण्या, अर्पन केली काया ।। ४ ।। मा.

भजन २६ (तर्ज– थकले रे नंदलाला)

दु:ख कळे ज्याचे हो त्याला, नकळे अन्य प्राण्याला ।
जागती ते संत विभूती, कष्टविती देहाला ।। घृ. ।।

जगी या तारक म्हणूनी झाले, अवतार घेउनी संत आले ।
उपदेश देण्या अज्ञजना हो, मुक्त करी जीवाला ।। १ ।।

आताचा ना हा इतिहास, आहे मूळ पुराता ।
संत मीरा ती जनाबाई, सांगुनी गेले धामाला ॥ २ ॥

जडमती सारे तरीपण जनहे, संत ध्वनी नाही विश्वास ।
तया प्रभू धरीले अवतार, दृष्टांना संहरण्या ॥ ३ ॥

जैरामदास सांगतो बाबा खोटे कधीना सत्य होणार ।
मारुनी अभक्त लोकां, सुरु म ग सत्य युगाला ॥ ४ ॥

३५६ २१

ओवी १ (सज्जन गुणाची लक्षणे)

आई माझे बहीनींनो, जरा द्यावे चित्त ।
धान मशीन आली गांवात, आळस भरला अंगात ॥ १ ॥

तुमची सासु दळण, दळीत होती पाहाटेस ।
आठवत होती देवाजीस, रामकृष्ण गोविंद ॥ २ ॥

सकाळ पर्यंत झोपता, थकला भरला म्हणून ।
सोडून दिले निती धर्म, रामकृष्ण गोविंद ॥ ३ ॥

मशीनचे तांदळाने, अशक्ति आली अंगास ।
पैसे खर्चून औषध खाता, व्यर्थ पाडता खर्चात ॥ ४ ॥

गरीबी आली घरात, पैसा नाही पदरात ।
जैरामदास सांगे मात, रामकृष्ण गोविंद ॥ ५ ॥

३५६ २१

भजन २७ (तर्ज– मेरा नाम है चमेली)

तुम्ही सत्य मार्गाने चाला, मुखी हरी नाम बोला ।
तो भावाचा भुकेला वनमाळी ॥

या कपट द्वेशाला त्यागा, हरीनामी तुम्ही लागा ।
तो भावाचा भुकेला वनमाळी ॥ ध्रु. ॥

दृढ भाव असे ज्याचा, त्याचा तो यदुराया ।
भक्ताचे तो कामे करी, ठेवी छत्रछाया ।
झाला असे तो चोख्याचा ।
भक्तांचा अेकीत होउनी, कामे करु लागला ॥ १ ॥ तुम्ही
दया शांती प्रेमभावे, सर्व जीवा पाही ।
द्वेष न ठेवी कोणाचा, तो विश्व हरी पाही ।
देह अर्पिला देवा चरणी ।
परमार्थाचे कामे करुनी, हरीनामी लिन झाला ॥ २ ॥ तुम्ही
गंगापरी निर्मळ मन ज्याचे, सर्व जीवा ।
जयराम म्हणे तोच भूवरी, वैकुंठाचा राणा ।
नाही खोटयात काही सार ।
क्षणोक्षणी विचार करुनी, मला तुम्ही विठ्ठल ॥ ३ ॥ तुम्ही

भजन २८ (तर्ज– प्रभू हा खेळ दुनियेचा) ३५ दे २N

सुखाचा मार्ग बघण्यासी, धरी तव संत चरणासी ।
तरील मग जीव हा तूझा, प्रण करी आपुल्या मनाशी ॥ धृ. ॥
महालमाडी नी धन पुत्र, जयाला सुख तू मानी ।
सत्य हे काम करण्याचे, कसा तू भुलून गेलासी ॥ १ ॥
खेळ हे लटकी मायेचे, कोणी ना यात उपरले ।
रावणा सारखे शूर, कंस तो राजा मथुरेचा ॥ २ ॥
नव्हे हे सुख संसारी, संताचे सुख हे न्यारे ।
अनुभव पाहिल्या वीणा, न जाणे खुद वमोशी ॥ ३ ॥

सांगतो दास जयराम, आता तरी ठेवा ध्यानात ।
तरी पण ना कळे मात, गुरुपण काय करील त्यासी ॥ ४ ॥

भजन २९ (तर्ज– नंदलाल गोपाल दया करके)

अज्ञानी जीवा निती, नेमाविण कसा तरशीरे ।
मंदीरी जाऊनी पूजा करिसी, नाही दया तिळभरीरे ॥ धृ. ॥

क्रोध तुझा नाहीरे विरला, द्वेष तू ठेवी अंतरी ।
पाषाणाच्या मुर्ती पुढे, जीव बळी तू देशा ।
किव नाही थोडी ही मनाला, हौशेने तू खाशी रे ॥ १ ॥

मुलेबाळे आजारी पडली, तूं धाव घेशी वैद्याकडे ।
सांगें तुझला तो वैद्यबुवा, घेउनी ये कोंबडा शीशी ।
पालन पोषन केले ज्याने, त्यांना तु त्रास देशीरे ॥ २ ॥

मेल्यावरती घेउनी अस्ती, तु पींडदान करशीरे ।
म्हणे जैराम जीवावरी, दया भाव तु न ठेवीरे ।
आपुले आपन शोधून पाहा, तेव्हा तू तरशील रे ॥ ३ ॥

अभंग — १

माय माझी विठाबाई । भक्ताची ती करूणा येई ।
बाप माझा पांडुरंग । देतो आम्हासी तो संग ।
लक्ष्मण आमचा चुलता । उभा आहे वाट पाहता ।
साधुसंत आमचे गणगोत्र । त्याने जीवन केले पवित्र ।
गीता आमची जग तारणी । धर्म दावी क्षणोक्षणी ।
देह आमचा आहे देवुळ । बसला आहे तो विठ्ठल ।
ओळखी करा जैराम म्हणे । गुरुविण कोणी न जाणे ।

भजन ३० (चाल– अगर है ग्यान को पाना) अनुक्रमांक ११

झिझावे देह पर उपकारी, बाल्यावस्था तळमळ ।
पाहुनी दिनाची दु:खे, नयनो येत असे जळ ॥ ध्रु. ॥

पठन करीतसे नित्य थोर पुरुषाचे चरित्र ।
हृदयी प्रेम भरुन करावी कामे तळमळ ॥ १ ॥

धरीला संताचा संग चढला, भक्तिचा रंग ।
प्रपंची पडली आटा–आटी, घरी नाही अन्न तिळभर ॥ २ ॥

अश्या वेळ प्रसंगी, कुटुंबी म्हणती करा कामे ।
मन लागले हरि चरणी, कामी येती अडथळे ॥ ३ ॥

केली नोकरी काही दिवस, लक्ष लागेना कामात ।
भोगले किती तरी दु:खे, संगत मिळाली लबाड ॥ ४ ॥

म्हणे जैराम जे करणे, त्यात पडली असे आटी ।
पाहुनी ते दुराचार – देई तु चरणी आधार ॥ ५ ॥

भजन ३१ (चाल–तेरी प्यारी२ सुरत पर) अनुक्रमांक ११

किती मधूर तुझी मुरली कान्हा, ऐकुनी मन रमले ।
रे घनश्यामा ॥
विसरली सुध–बुध मीसारी, ऐकुनी तुझी मुरली ।
रे घनश्यामा ॥ ध्रु. ॥

काम धाम सोडूनी घरी, आली तुझियां मधूवनी ।
देहभाव विसरुनी सोर, मुरली मोहनी लागली ।
घरी सासु-सासरे रागवती, अन तान्हे बाळे रडती,
रे घनश्यामा ॥ १ ॥

कशी मोहिनी तुझी मोहना, जिकडे पाहाते तूं नैना ।
तुजविन नाही चैन जिवाळा, कशि मिळे सांत्वना ।
आवर रे अपुली बांसुरी, घरी जाऊ दे रे कान्हा,
रे घनश्यामा ॥ २ ॥

जो जो मुरली सूर करी, मन हे नाचे वेड्यापरी ।
गगना वरती वाजे वीणा, अनहृद नाद कानावरी ।
घडघड घडघोळ घंटा वाजे, चमके जणू बिजली,
रे घनश्यामा ॥ ३ ॥

वेड लागले तुझे मला, देरे दर्शन गोपाळा ।
व्याकुळ मी नाना जन्माची, कृपा करी रे तु मजला ।
जैरामदास म्हणे ना कोणी, तुजविण दया सागरा,
रे घनश्यामा ॥ ४ ॥

भजन ३२ (चाल— काय सांगु त्या देवाची मात)

किती सांगु नवल विठ्ठल, संकट काळी ब्रीद रक्षीला ॥ धृ. ॥
जे जे होती तुझे नांव, ठेवुनी हृदयी श्रद्धाभाव ।
भक्ताचा अंकीत तु झाला ॥ १ ॥

भेद भाव नाही ज्याचे पाशी, दृष्टी पाहीं सर्वांशी ।
त्यांचा संकट मुक्त केला ॥ २ ॥

तन मन वाहिले तुझे पायी, त्याला उणीव कसली नाही ।
ओझे त्यांचे तु वाहिला ॥ ३ ॥

जनीने दळीले दळण, मिरेचे केले विष प्राशन ।
गोऱ्याचे पोर वाचविला ॥ ४ ॥
म्हणे जैराम निर्धार मनाचा, अंगी गुण सुकर्माचे ।
त्यांचा अंकित देव झाला ॥ ५ ॥

भजन ३३ (चाल– १ जगी जिवनाचे सार)
(चाल– २ अंखियों के झरोखो से)

विचाराचे दर्शन घ्यावे, स्वहित तिथे पहावे,
कल्पविकल्प त्यजावे, अहित सोडुन द्यावे ॥ धृ. ॥
नितीशी प्रिती करा, आत्म देवाचे नेहमी वरा ।
तोच तुझारे सोयरा, भाव बळकट तुम्ही धरा ।
त्याने देव ओळखावा, धडे जिव्हाळयाचे घ्यावे ॥ १ ॥
प्रचिती त्यागा पायी, माया मोह नष्ट होई ।
वैराग्य तेव्हा चढे, ज्ञान सरिता तिथे वाही ।
विवेक भक्ति कड नेई, मुक्ति पद गाठावे ॥ २ ॥
नाम रुपी लीन झाला, जिवंत राहून मेला ।
सर्व ठायी ब्रह्म उरला, दुजा कोणी न दिसला ।
तुझा तुच सर्व ठायी, गुरुकृपे अनुभव घ्यावे ॥ ३ ॥
मन बुद्धी ठाम चित्त, पूर्ण होईल मनोरथ ।
कुठें पडे न कमतरता, गोष्ट आणा ही ध्यानात ।
जैरामाचे ब्रीद वाक्य, हृदयात ठसवावे ॥ ४ ॥

भजन ३४ (चाल– जगी जीवनाचे सार)

वरुन गोड अंतरी गोड, त्याचे पायी काय रड ।
जगाशी तो प्रेम देई, सर्व ठायी त्याची ओळ ॥ धृ. ॥

परहित अपुले हीत, जिवन त्याचे आनंदात ।
झाले किती तरी दु:ख, त्याशी मानी अपुले सुख ।
सम असे त्याचे रुख, सर्व भूती त्याची काळ ।। १ ।।

तिळ मात्र गर्व नाही, दुष्ट सज्जन एक पाही ।
आत्म्याची ठेवून ग्वाही, कामात तो राम पाही ।
फिरत असे दिशा द्राही, जन्म घेवून करी फेड ।। २ ।।

असा ज्ञा आहे तो विदेही, रमत असे ब्रम्ह ठाई ।
आपुले हित आपण पाही, आनंदात मग्न राही ।
जैराम म्हणे बाह्य पिसा, कोण ज्यानी त्याचे फेड ।। ३ ।।

भजन ३५ (चाल- माझी सुख सम्पत्ती राम२)

राम नाम, राम नाम,
ज्ञान धन सम्पत्ती ज्याचे पाशी, काय उने असे त्यासी ।। ध्रु.।।
स्वानुभवाचे बोल ज्याचे मुखी, सर्वांचे जिवन करी सुखी,
तिथे मिळे सुख शांती हो ऽऽऽ– ।। १ ।।
सुख दु:खा ची पर्वा नसे, अंतरी उमटे ब्रम्ह ठसे,
लहरी च्या लाटा उठती हो ऽऽऽ– ।। २ ।।
आकार निराकार, त्याचे खंड, सर्व भूति असे, त्याचे बंढ,
जगाशी तो चालवितसे हो ऽऽऽ– ।। ३ ।।
कर्ता हर्ता अगोचर दृष्टी, विश्वाची मावळली सृष्टि,
ब्रम्ह पक्षी नाचीतसे हो ऽऽऽ– ।। ४ ।।
राम नाम लेने अंगी, सर्व जिव त्याचे संगी,
ब्रम्ह पद भोगी तसे हो ऽऽऽ– ।। ५ ।।
जैराम म्हणे ठाम मत, गुरु चरणांचे त्याचे व्रत,
कोण जाणे त्याचे पिसे होऽऽऽ– ।। ६ ।।

भजन ३६ (चाल– जहाँ वहाँ जहाँ तहा (संतोषी माँ)

हाँव-हाँव, काँव काँव, मनी असे खाँव खाँव
सुख कसे जिवनाला, आयुष्य व्यर्थची गेला,२
सर्व ठायी, भ्रांती, भ्रांती, कुठे न त्याला शांती,
अंतरी ना निवला, आयुष्य व्यर्थची गेला२ ।। ध्रृ.।।

हित आपुले पाहिले ना कधि, पाठीशी उपाधी३ ।
मन फिरे हा सैरा वैरा, विषयाचे नादी३ ।
मोह मायेची धरुनी आस, भूलला देवाला,
सुखविण दुःख शारी, अज्ञानात पडला हो देवा अज्ञानात पडला,
इहलोक परलोक सर्वठायीं, घक2 संधी खोविला ।। १ ।। आ.

पूर्व जन्माचा माठा पदरीं, खोविला कुसंगी३ ।
मार्ग धरूनी असत्याचा, चाल दुरगी३ ।
मर्यादाचे अंगी न गुण खोटे शहाणपन ।
धोके घडी चे मनी ज्ञान फसवी लोकाला, हो देवा फसवी लोकाला,
छल बल, खल बल, बोल बोली वर-वर, भुलून मानुसकिला ।।२।।आ.

जन्म घेवूनी पृथ्वी वर, भार आला तसा गेला३ ।
कोणाचे का कामी पडला, जिवंत राहून मेला३ ।
अस्या करण्या कुठे न थारा, बाळ जन्मा आला,
उठ बस पाठी नेहमी लागे, चौऱ्यासी पडला हो देवा
चौऱ्यासी पडला,
जैरामदास म्हणे जन्म मरणे, गायी गाण्याल्या ।। ३ ।। आ.

भजन ३७ (चाल– मैं एक नन्नासा बच्चा हूं)

मी रामाचा अहो मी कामाचा सर्वांच्या हिताचा, मी सेवक
जनतेचा ।। ध्रृ. ।।

दिन दुबळ्या साठी मनि कळवळा, धरुनी जातो दारोदारा ।
सर्व जिवांना सुख मिळो हीच माझी लळा ।
प्रेम देऊनी प्रेम घेणे हाच माझा सोहळा ।
अष्ट प्रहर झिजो शरीर, हीच माझी अपेक्षा ॥ १ ॥

कुणाचे मज फूकट न खाणे, नित्य श्रम करणे ।
स्वत: करुनी दुज्यास, शिकविणे हेच माझे गाणे ।
स्वावलंबी जिवन राहो, कोणा पडो न उणे ।
वेडा भजनाचा, कट्टर मताचा, जिव्हाळा आत्मारामाचा ॥ २ ॥

खोट्या कामाची चिड मनी, गरिब हो वा धनी ।
पेश होतो नित्य न्यायाने, राहीत माझे कोणी ।
मुळीच न केली पर्वा त्याची, कोणी करो माझी हानी ।
स्वाभीमानाचा स्वधर्माचा, उद्देश जैरामाचा ॥ ३ ॥

भजन ३८ (चाल– ए दिल वालो दिल का लगाना अच्छा है पर कभी कभी)

नांव असे या देहाचे, क्षण भंगूर या कायेचे ॥ धृ. ॥

खेळ खेळती ही माया, स्वप्न सुखाची ही छाया ।
प्रिती जोडी धनपुत्रा, आवडी मोठी ती जाया ।
मन फिरे हा संरा वैंरा, जीवा शांती कुठ तया ॥ १ ॥

जीव रमे हा अज्ञानांत, भुली भ्रांतीच्या फाश्यात ।
कुठे न मिळे त्याला तथ्य, भुलला माझ्या तुझ्यात ।
विवेक दृष्टि बंद झाली, प्रित न जोडी गुरुराया ॥ २ ॥

काम आठवी सदा, भजें न कधी हा गोविंदा ।
रुप मनोहर पाही मजा, पूर्व पुण्य झाले वजा ।
कैसा देव हा करी रजा, पाठी मागे यम फौजा ।। ३ ।।

जैरामदास म्हणे रे बाबा, कर्म फळ चुके न कदा ।
जन्म मरण चुकवी फेरी, सतसंगी लाग सदा ।
या वचनासी भुलुं नकोरे, मानव जन्म करी अदा ।। ४ ।।

भजन ३९ (चाल–पाप नाही ज्याचे मनी......)

जन्म जात स्वभाव, जात त्यांची कुठे पाहता ।
अहर्निशी ब्रह्मानंदी दुःख, सुख काय बाधी ।। ध्रु. ।।

एक ब्रम्ह पाही ह्रुदयाचे ठायी ।
दुजे भुप नाही तिन्ही लोकी ।। १ ।।

असे ज्याचे ठाम मत, होई देव वस्ती ।
निर्गुण सगुण वास अंतरबाह्य एक दृष्टि ।। २ ।।

कुणाचे न घेणे देणे, स्वहिताचे द्यावे नाणे ।
आपुल्यांत आपण पाही, रमतसे उन्मनी ठाई ।। ३ ।।

जैराम म्हणे देहजात, देहासहित लय होई ।
आत्माराम अविनाशी, जन्म मरण न तयासी ।। ४ ।।

भजन ४० (चाल-सुहानी चांदनी रातें)

ज्याचा अनुभव त्याला आला, काय कळेल त्या मुळाला
तर्क वितर्क ज्यांचे पाशी, मिळे नाही कुठे शाश्वती ।।धृ ।।

दुष्ट असे त्याची वृती, आपल्या सारखे पाही जगती ।
निंदकाचे पाय धरीले, निंदा केल्या विन बरे न भले ।
सर्पाशी दुध पाजीले, अमृत ना मिळे त्याचे हाती ।। १ ।।

कावळा कोकिळ, एक रंग, बोला मध्ये असे भेद ।
मनुज देव राक्षस देवा, अंतरात दुजे भाव ।
जंराम म्हणे तर्क ज्ञानी, दुःख पडले त्याचे जिवनी ।
दया भाव नाही मनी, पुढे त्याला मृत योणी ।। २ ।।